अमेरिका का चालाक कायोटी

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: America Ka Chalak Kayotee (Cunning Coyote of America)
Cover Page picture: Coyote: a small desert Wolf
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of North America

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

अमेरिका का चालाक कायोटी 7

1 दुनियॉ की शुरूआत 9

2 बक्से में सूरज और चॉद 12

3 कायोटी टियोडोरा 18

4 भैंस धरती पर कैसे आयी 22

5 सफेद कौए ने जानवरों को छिपाया 28

6 कायोटी और मौत का जन्म 39

7 कायोटी और लुढ़कती हुई चट्टान 43

8 स्कंक ने कायोटी को पछाड़ा 49

9 कायोटी ने अपने दोस्तों की नकल करना क्यों छोड़ा 55

10 भूखा कायोटी 63

11 ईकटोमी और कायोटी–1 71

12 ईकटोमी और कायोटी–2 76

13 ईकटोमी और बतखें 84

14 कायोटी और कछुआ 92

15 कायोटी और विशपूश बीवर 97

16 खरगोश और कायोटी 103

17 मरे हुओं की दुनियॉ में कायोटी और गरुड़ 108

18 कायोटी का क्रिसमस 114

19 योसेमिटी का संगीत 128

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले करीब **100** साल पहले ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

अमेरिका का चालाक कायोटी

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। जब तक पनामा कैनाल[1] नहीं बनी थी, यानी **1914** तक, उससे पहले से यानी जबसे इसे **1492** में कोलम्बस ने खोजा था तब तक उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका धरती का एक ही टुकड़ा थे।

धरती के इन दोनों हिस्सों को, यानी उत्तरी अमेरिका को और दक्षिणी अमेरिका को, **15**वीं शताब्दी के अन्त में क्रिस्टोफर कोलम्बस को खोजने का श्रेय मिला। उससे पहले के जो धरती के नक्शे मिलते हैं उनमें इन दोनों महाद्वीपों का कहीं कोई नामो निशान भी नहीं मिलता। इनकी खोज के बाद यहॉ यूरोप के देशों से लोग आ कर बसना शुरू हो गये। तब तक भी उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका दोनों एक ही महाद्वीप थे। इसके अलावा कैनेडा देश भी पहले उत्तरी अमेरिका में ही आता था। वह कोई अलग देश नहीं था।

अमेरिका के रेड इंडियन्स या आदिवासी या यहॉ के मूल निवाससियों की लोक कथाओं में कायोटी की अपनी एक अलग ही जगह है। यह एक छोटे साइज़ का रेगिस्तानी भेड़िया होता है और उनकी बहुत सारी लोक कथाओं का हीरो है। इसको अमेरिकन गीदड़ और मैदानों का भेड़िया भी बोलते हैं।

इसकी एक खासियत यह है कि यह उन्नीस किलोमीटर चौड़े घेरे में जमीन के नीचे रहता है और दूसरी खासियत यह है कि यह अपने रहने की जगह को अपने पेशाब से घेर कर रखता है। उसकी बू से दूसरे जानवर इसके क्षेत्र में नहीं आ पाते। इनकी कहानियों में यह चालाक, शरारती और इनके अपने हीरो के रूप में दिखायी देता है। हालॉकि इन कहानियों में यह नर के रूप में ज़्यादा दिखायी देता है पर यह मादा या नपुंसक या अपना लिंग बदलने वाला भी हो सकता है।

यहॉ कायोटी की कुछ कहानियॉ दी जातीं हैं। ये अलग अलग जगहों से इकट्ठी की गयी हैं। आशा है कि ये कहानियॉ लोगों का मन तो बहलायेंगीं ही, साथ में उनको अमेरिका के रेड इंडियन्स या आदिवासी या यहॉ के मूल निवासियों के बारे में जानकारी भी देंगी।

---

[1] Panama Canal, 110 feet wide, 48 miles long canal, separates North America and South America continents and facilitates the transportation between Atlantic and Pacific oceans saving about 8,000 mile journey around the Cape Horn of South America. It took 10 years to be built, 1904-1914. It was opened to public in 1914.

संसार के सात महाद्वीप

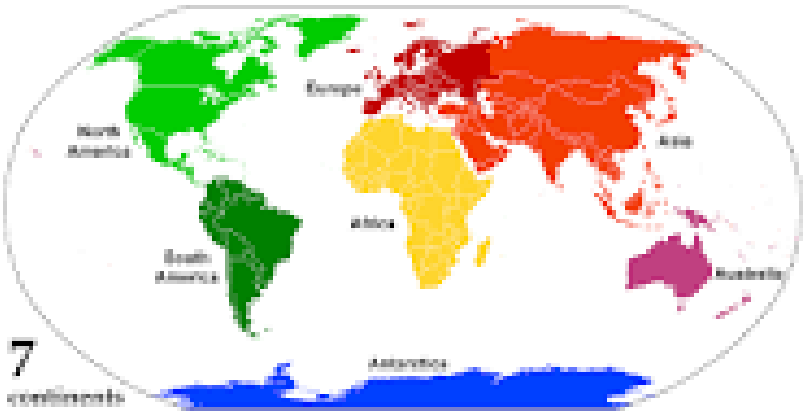

1 दुनियॉ की शुरूआत[2]

शुरू शुरू में सब जगह पानी ही पानी ही था। बस जमीन का एक ज़रा सा टुकड़ा बाहर था। इस जमीन के टुकड़े पर रहते थे एक कायोटी और एक गरुड़[3]।

एक दिन एक कछुआ उनके पास तैरता हुआ आया तो उन्होंने उसको वापस पानी में भेज दिया और कहा कि वह समुद्र की तली में फिर से जाये और वहॉ से मिट्टी ढूँढ कर ले कर आये।

कछुआ पानी की तली में पहुँचा ही था और उसने अपने पैर वहॉ रखे ही थे कि वह फिर ऊपर आ गया पर तब तक उसके पैरों में से सारी मिट्टी धुल चुकी थी।

कायोटी ने उसके नाखूनों की तरफ ध्यान से देखा कि उसको कहीं कुछ उसके पैरों में लगा मिल जाये तो उसको मिट्टी का एक कण चिपका हुआ दिखायी दे गया।

कायोटी और गरुड़ ने मिट्टी के उस कण को उसके पैर से निकाल लिया और रख लिया। फिर उस कण से उन्होंने इतनी बड़ी धरती बनायी जितनी बड़ी कि आज हम उसे देखते हैं।

---

[2] The Beginning of the World – a folktale from Native American, North America. From Yokuts Tribe. Adapted from the Book : "American Indian Trickster Tales" edited by Richard Erdoes and Alfonso Ortiz.

[3] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

फिर उस धरती से उन्होंने छह आदमी बनाये और छह औरतें बनायीं। उनको उन्होंने जोड़े बना बना कर दुनियॉ में चारों तरफ भेज दिया और इस तरह लोग चारों तरफ बिखर गये।

कुछ समय बाद गरुड़ ने कायोटी को यह देखने के लिये भेजा कि देख कर आओ कि दुनियॉ में लोग क्या कर रहे हैं।

कायोटी वापस आया तो उसने बताया कि लोग बुरे बुरे काम कर रहे हैं। वे धरती को खा रहे हैं और इस वजह से धरती एक तरफ से तो बिल्कुल ही खत्म हो गयी है।

गरुड़ बोला — "यह तो बड़ी बुरी बात है। हमको उनको खाने के लिये कुछ देना चाहिये तब वे हमारी बनायी धरती नहीं खायेंगे। हम फाख्ता[4] को भेजते हैं वह खाने के लिये कुछ न कुछ ढूँढ कर जरूर लायेगा।"

सो फाख्ता इधर उधर गया। उसको खाने का एक टुकड़ा मिल गया तो कायोटी और गरुड़ ने उसको जमीन पर रख दिया। उस एक दाने से तो सारी धरती बीजों और फलों से भर गयी।

अब उन्होंने अपने बनाये लागों से कहा कि वे बीज और फल खायें। जब बीज सूख जाते थे और पक जाते थे तो लोग उनको इकट्ठा कर लेते थे और खाते थे।

[4] Translated for the word "Dove". See its picture above.

अब लोगों की गिनती बढ़नी लगी और वे धरती पर चारों तरफ फैलने लगे पर पानी धरती के नीचे ही रहा।

2 बक्से में सूरज और चॉद[5]

एक बार कायोटी और चील शिकार के लिये निकले तो चील ने तो कुछ खरगोश पकड़े पर कायोटी को केवल टिड्डे[6] ही मिले।

कायोटी बोला — "दोस्त चील, मेरे सरदार, हम लोगों की यह शिकार खेलने वाली जोड़ी तो बहुत अच्छी रही।"

चील बोला — "हॉ, हम लोगों को एक साथ रहना चाहिये।"

उसके बाद वे पश्चिम की तरफ चले गये। चलते चलते वे एक बहुत ही गहरी घाटी के पास आये तो चील बोला — "चलो, इस घाटी को उड़ कर पार करते हैं।"

कायोटी बोला — "पर मेरे सरदार, मैं तो उड़ नहीं सकता। अब तुम ही मुझे उस पार ले चलो।"

चील बोला — "मुझे भी कुछ ऐसा ही लग रहा है कि मुझे ही तुम्हें उस पार ले जाना पड़ेगा।" कह कर चील ने कायोटी को अपनी पीठ पर बिठाया और उसे घाटी के उस पार ले गया।

अब वे वहॉ से आगे चले तो एक नदी के पास आये। चील बोला — "तुम उड़ तो नहीं सकते थे पर मुझे यकीन है कि कम से

[5] Sun and Moon in a Box – Adapted from the book :
"American Indian Trickster Tales" edited by Richard Erdoes and Alfonso Ortiz.
[6] Translated for the word "Grasshoppers"

कम तुम तैर तो सकते हो। तो इस बार मुझे तुम्हें अपनी पीठ पर उठाना नहीं पड़ेगा।"

सो चील उस नदी को ऊपर से उड़ कर पार कर गया और कायोटी उस नदी को तैर कर पार कर गया।

पर कायोटी कोई बहुत अच्छा तैराक तो था नहीं सो वह बेचारा कई बार डूबते डूबते बचा। रास्ते में भी उसने कई बार पिया हुआ पानी भी उगला।

पार आ कर वह चील से बोला — "मेरे सरदार, अबकी बार अगर हम किसी दूसरी नदी के पास आयें तो तुम मुझे उठा कर ले जाना।"

यह सुन कर चील को बड़ा अफसोस हुआ कि उसने कायोटी जैसे जानवर को अपना साथी चुना। अब वे चलते चलते कचीना पुएब्लो[7] आ गये। वहाँ कचीना लोग नाच रहे थे।

इस समय आसमान में न तो सूरज था और न ही चाँद था। धरती अभी मुलायम और नयी थी। कायोटी और चील वहीं बैठ गये और उन कचीना लोगों का नाच देखने लगे।

उन्होंने देखा कि कचीना लोगों के पास एक चौकोर बक्सा था। उसमें उन्होंने सूरज और चाँद रखे हुए थे।

[7] Kachina Pueblo – name of a place where Kachina people lived.

जब भी उनको रोशनी की जरूरत पड़ती वे उस बक्से का ढकना खोलते और सूरज की थोड़ी सी रोशनी को बाहर आने देते। उस समय दिन हो जाता।

और जब उनको कम रोशनी की जरूरत होती तो वे बक्से को बहुत ही ज़रा सा खोलते और चॉद की रोशनी को बाहर आने देते तो उस समय रात होती और चॉद की हल्की हल्की रोशनी हो जाती।

कायोटी चील के कान में फुसफुसाया — "दोस्त चील, यह तो बड़ी अच्छी चीज़ है।"

चील बोला — "ऐसा लगता है कि इन्होंने इस बक्से में ये सूरज और चॉद बन्द कर रखे हैं। मैंने इन दोनों के बारे में पहले सुना है।"

कायोटी बोला — "चलो इस बक्से को चुरा लेते हैं।"

चील बोला — "नहीं, चुराना तो गलत काम होगा हम इस बक्से को इनसे उधार मॉग लेते हैं।"

जब कचीना लोग उस बक्से की तरफ नहीं देख रहे थे तो चील ने वह बक्सा उठा लिया और उसको ले कर उड़ गया। कायोटी उसके पीछे पीछे जमीन पर भाग लिया।

कुछ देर के बाद कायोटी जमीन पर से ही चिल्लाया — "मेरे सरदार, मुझे यह बक्सा दे दो। तुम यह सब उठा कर भाग रहे हो यह देख कर मुझे शर्म आ रही है।

यह काम तो मुझे तुम्हारे लिये करना चाहिये। अगर मैंने तुमको यह बोझ उठाने दिया तो लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे।"

चील बोला — "बिल्कुल नहीं, मैं यह बक्सा तुमको किसी हालत में भी नहीं दे सकता। तुम भरोसे के लायक बिल्कुल भी नहीं हो। क्योंकि तुम अपने आपको इस बक्से को खोलने से रोक नहीं पाओगे और अपनी उत्सुकता में इस बक्से को खोल कर देखोगे ही।

और अगर तुमने इसे खोल लिया तो इसमें रखीं ये बढ़िया चीज़ें हमारे हाथ से निकल जायेंगी जो हमने उनसे उधार लीं हैं।"

कायोटी बोला — "नहीं मेरे सरदार, तुम मुझसे डरो नहीं। मैं बक्से खोलने के बारे में सोचूँगा भी नहीं।"

पर चील ने उसको वह बक्सा नहीं दिया और उसको अपने पंखों मे दबाये वह आसमान में उड़ता ही रहा। उधर कायोटी भी उसकी खुशामद करता रहा।

"मेरे सरदार, मुझे सचमुच ही बहुत बुरा लग रहा है। लोग कहेंगे कि यह कायोटी अपने सरदार चील की बिल्कुल भी इज़्ज़त नहीं कर रहा है और उसको वह सामान ढोने दे रहा है।"

चील ने फिर उसको मना किया — "नहीं, यह बक्सा मैं तुमको नहीं दूँगा मैंने एक बार कह दिया न। इतने कीमती बक्से को ले जाने के लिये मैं तुम्हारे ऊपर भरोसा नहीं कर सकता, बिल्कुल भी नहीं।"

वे फिर उड़ते और चलते रहे। कायोटी ने अबकी बार उससे चौथी बार कहा — "मेरे सरदार, मेहरबानी कर के यह बक्सा मुझे उठा लेने दो। अगर मेरी पत्नी को पता चल गया कि मैंने यह बोझ तुमसे नहीं लिया तो वह मुझे बहुत डॉटेगी। और मेरे बच्चे भी मेरी इज़्ज़त नहीं करेंगे।"

इस पर चील ने अनमने मन से कायोटी से कहा — "क्या तुम मुझसे वायदा करते हो कि तुम किसी भी हालत में इस बक्से को न तो गिराओगे और न ही खोलोगे?"

कायोटी खुशी से चिल्लाया — "मैं वायदा करता हूँ मेरे सरदार, मैं वायदा करता हूँ। तुम मुझ पर पूरा भरोसा कर सकते हो। मैं तुम्हारे भरोसे को तोड़ूँगा नहीं।"

सो चील ने आखिर कायोटी को वह बक्सा उठाने की इजाज़त दे दी। अब कायोटी उस बक्से को ले कर चल रहा था। दोनों फिर से चलने लगे – चील आसमान में उड़ता हुआ और कायोटी जमीन पर उस बक्से को मुँह में दबा कर भागता हुआ।

उड़ते दौड़ते वे एक जंगली हिस्से में आ पहुँचे। वहाँ बहुत सारे पेड़ थे और झाड़ियाँ थीं। कायोटी ने यह दिखाया कि वह पीछे रह गया है और वहाँ वह झाड़ियों में ऐसे छिप गया जहाँ चील उसको नहीं देख सकता था।

अब वह बक्से को खोलने की उत्सुकता को नहीं रोक सका। वह वहीं बैठ गया और बक्सा खोल दिया। तुरन्त ही सूरज बक्से में

से बाहर आ गया और उड़ कर आसमान के दूसरे किनारे पर जा बैठा।

इससे तुरन्त ही सारी दुनियॉ ठंडी हो गयी। पेड़ की शाखों से पत्ते नीचे झर गये और जमीन पर उगी हुई हरी हरी घास कत्थई पड़ गयी। बर्फीली हवा चलने लगी जिससे सारे जीव जमने से लगे।

अब इससे पहले कि कायोटी उस बक्से का ढकना बन्द करता चॉद भी उस बक्से में से कूद कर भाग गया। वह आसमान के बाहरी वाले किनारे पर जा कर बैठ गया। आसमान से बरफ गिरने लगी और उसने धरती के मैदानों और पहाड़ों सबको ढक दिया।

यह देख कर चील बोला — "मुझे यह पहले से ही मालूम होना चाहिये था कि तुम भरोसे के काबिल नहीं हो। मुझे तुमको वह बक्सा देना ही नहीं चाहिये था। मैं जानता था कि तुम किस तरह के नीची जाति के, चालाक और बेवकूफ किस्म के जानवर हो।

मुझे तो तुम्हारे बारे में बस यह याद रहना चाहिये था कि तुम अपना वायदा कभी नहीं निभाते। अब जाड़ा आ गया है। अब अगर तुमने यह बक्सा नहीं खोला होता तो ये सूरज और चॉद हमेशा हमारे पास रहते। फिर कभी यह जाड़ा आता ही नहीं और हमेशा ही गर्मियॉ रहतीं।"

पर कायोटी ने तो अपना काम कर दिया था। वह तो धरती के लोगों के लिये सूरज और चॉद ले ही आया था।

3 कायोटी टियोडोरा[8]

उत्तरी अमेरिका की बहुत सारी लोक कथाओं के हीरो कायोटी रेगिस्तान के एक छोटे भेड़िये का नाम है। और टियोडोरा एक कायोटी स्त्री थी यानी वह एक औरत के रूप में भेड़िया थी। यह स्त्री शैतानों के बहुत सारे भेद जानती थी।

यह लोक कथा वहॉ के हौन्डुराज़ देश में कही सुनी जाती है। होन्डुराज़ यू ऐस ए के दक्षिण में गुआटेमाला के दक्षिण में स्थित है।

टियोडोरा की शादी एक बहुत ही अच्छे और शान्त आदमी से हुई थी। वह आदमी अपने खेत पर काम करता था और उससे उसे जो कुछ भी मिल जाता था उसी से सुख से गुजारा कर रहा था। उन लोगों की आमदनी बहुत ज़्यादा नहीं थी पर उनका पेट भर जाता था।

पर टियोडोरा का रसोईघर हमेशा ही बहुत बढ़िया खानों से भरा रहता। वह हमेशा ही अपने पति और अपने लड़के को बढ़िया बढ़िया खाना परोसती थी।

यह सब देख कर उसके पति को ताज्जुब होता कि इतनी कम आमदनी में अपने परिवार को वह इतना बढ़िया खाना कैसे खिला सकती थी।

[8] Coyote Tiyodora – a folktale of Honduras, North America.

यदि कभी वह टियोडोरा से इस बारे में पूछता भी तो टियोडोरा या तो सुना अनसुना कर देती या कभी कहती कि मुझे किसी पड़ोसी ने दिया है, या कभी कहती कि मुझे मेरी किसी दोस्त ने दिया है।

पर वह आदमी भी बेवकूफ नहीं था। उसने सोचा कि क्या वह सब सच था जो टियोडोरा उससे कहती थी? इस तरह से रोज रोज उसको खाना कौन देगा। दिन पर दिन उस आदमी का शक बढ़ता गया सो उसने टियोडोरा के ऊपर रात को पहरा देना शुरू किया।

पहले तो उसे कुछ पता नहीं चला फिर एक दिन रात को जब वह जागा हुआ था तो उसको लगा कि उसका पलंग हिल रहा था। उसने देखा कि उसकी पत्नी बिस्तर से उठ रही थी।

उसने उसको और ध्यान से देखना शुरू किया। उसने देखा कि उठ कर उसने कोई प्रार्थना की। वैसी प्रार्थना उसने पहले कभी नहीं सुनी थी। फिर वह तीन बार बॉयी तरफ घूमी और फिर तीन बार दॉयी तरफ घूमी।

यह देख कर वह डर गया तो उसकी तो फिर अपनी पत्नी की तरफ देखने की हिम्मत ही नहीं हुई क्योंकि तब तक तो वह एक कायोटी बन चुकी थी।

वह इतना डर गया कि उसने अपना सिर चादर में छिपा लिया और उसने अपनी प्रार्थना करनी शुरू कर दी कि सारे संत उसको बचा लें। पर अगले दिन फिर उसके रसोईघर में वही बढ़िया बढ़िया खाने बन रहे थे।

उस दिन के बाद पति तो बहुत ही चौकन्ना हो गया पर क्योंकि वह औरत रोज रोज बाहर नहीं जाती थी इसलिये वह दोबारा उसको इस तरह से नहीं देख सका।

इसी तरह कुछ दिन और बीत गये। पर एक दिन फिर वह बिस्तर से उठी और उसने अपनी वही प्रार्थना पढ़ी और बाहर चल दी। इस बार उसके पति ने उसका पीछा किया।

उसने देखा कि एक कायोटी उसके पड़ोस की तरफ भाग गयी और वहॉ से अगले कई दिनों तक के लिये खाना इकट्ठा कर लायी। अब उसकी समझ में आ गया था कि उसकी पत्नी एक जादूगरनी थी और वह कभी भी कायोटी बन सकती थी।

सो वह एक पादरी के पास गया और उसे सब बताया। उस पादरी ने उसको सेन्ट फ्रांसिस[9] की एक डोरी दी और थोड़ा सा पवित्र पानी दिया और बोला — "ठीक उसी समय जब वह आदमी के रूप में आये इस डोरी से उसको तीन बार मारना और उसके ऊपर यह पवित्र पानी छिड़क देना तो वह फिर कभी भी कायोटी नहीं बन पायेगी।"

पति वह सब ले कर घर आ गया और जैसा पादरी ने उससे करने को कहा था उसने वैसा ही किया।

पर जैसे ही उसने उसको डोरी से तीन बार मारा और पवित्र पानी छिड़का उसका सिर और शरीर के ऊपर का हिस्सा तो स्त्री का

[9] Saint Francis – one of the many saints of Christians

हो गया क्योंकि पति ने उसको देख लिया था पर उसका पीछे का हिस्सा कायोटी का ही रह गया और बदला नहीं जा सका।

इस हालत में वह अपने पति के साथ नहीं रह सकती थी सो वह अपने पति और बेटे दोनों को छोड़ कर जंगल चली गयी। वह वहॉ अभी भी वहीं रह रही है जैसे और सारी जादूगरनियॉ रहती हैं।

4 भैंस धरती पर कैसे आयी[10]

शुरू शुरू में सारी भैसें एक बहुत ही ताकतवर कुबड़े आदमी के पास रहा करती थीं। वह उनको एक बाड़े में बन्द रखता था और वह बाड़ा भी सुन जुआन पहाड़[11] के उत्तर की तरफ था।

यह कुबड़ा न तो किसी भैंस को धरती पर भेजता था और न ही उनका मॉस अपने किसी पड़ोसी को खाने के लिये देता था।

धरती पर कायोटी[12] नाम का एक आदमी रहता था। उसने भी यह महसूस किया कि उस कुबड़े ने भैंस बन्द कर रखी थीं और वह किसी को भैंस नहीं देता था।

एक दिन उसने सोचा कि इस बारे में कुछ करना चाहिये सो उसने एक मीटिंग बुलायी और लोगों से कहा — "ऐसे तो यह कुबड़ा हम लोगों को कोई भैंस देगा नहीं सो हम लोगों को उसके बाड़े पर जाना चाहिये और उन भैंसों को छुड़ाने की कोई तरकीब करनी चाहिये।"

उन्होंने सबने हॉ में सिर हिलाया और ऐसा सोच कर वे सब एक दिन उस कुबड़े के घर के पास गये और वहीं डेरा डाल दिया।

---

[10] How the Buffalo Came to Earth? - a folktale of Native American Indians, North America. This story is of American Indians before the Europeans came to America.

[11] Sun Juan Mountain

[12] Coyote – pronounced as "Kaayotee" – a small desert wolf, hero of many American Indians' folktales.

रात हो जाने पर उन लोगों ने उस बाड़े की खूब जॉच पड़ताल की। उस बाड़े की दीवारें पत्थर की थीं और बहुत ऊॅची थीं। उन्होंने ढूॅढना शुरू किया कि वे लोग उस कुबड़े के घर में कैसे घुसें।

उन्होंने देखा कि वे लोग उसके बाड़े में ऐसे ही नहीं घुस सकते थे उसके बाड़े में केवल उसके घर के पिछले दरवाजे से ही घुसा जा सकता था।

चार दिन के बाद कायोटी ने फिर मीटिंग बुलायी और लोगों से भैंस खोलने के बारे में उनसे सलाह मॉगी। एक आदमी बोला — "कुबड़े के घर में से जाने के अलावा भैंसों के तबेले में जाने का और कोई रास्ता नहीं है और वह कुबड़ा हम सब लोगों से अधिक ताकतवर है।"

कायोटी बोला — "मेरे दिमाग में एक बात आयी है। हम लोग चार दिन से कुबड़े और उसके बेटे को रोज के काम पर जाते देख रहे है। क्या आप सबने ध्यान दिया है कि उसके बेटे के पास कोई पालतू जानवर नहीं है?"

लोगों की समझ में नहीं आया कि इस बात का भैंसों के छुड़ाने से क्या सम्बन्ध हो सकता है। पर उनको यह मालूम था कि कायोटी बहुत ही होशियार आदमी था इसलिये वे सब चुपचाप बैठे उसके आगे बोलने का इन्तजार करते रहे।

कायोटी आगे बोला — "मैं एक चिड़िया बन जाऊॅगा और कल सुबह जब वह नदी से पानी लाने जायेगा तो उसको एक पंख

टूटी चिड़िया मिलेगी। वह उसको पालना चाहेगा सो उसको वह अपने घर ले आयेगा।

और एक बार अगर मैं उसके घर पहुँच गया तो फिर मैं उसके भैंसों के बाड़े में बड़ी आसानी से पहुँच जाऊँगा।

वहाँ जा कर मैं खूब शोर मचाऊँगा। चिड़िया का शोर सुन कर सारी भैंसें बाड़े में से रस्सी तुड़ा कर भाग निकलेंगी और वे कुबड़े के घर में से होती हुई धरती की ओर चली जायेंगी।"

जानवरों को कायोटी की यह योजना पसन्द आयी। सो कायोटी की योजना के अनुसार अगले दिन जब कुबड़े का बेटा नदी से पानी लेने गया तो उसे एक पंख टूटी चिड़िया दिखायी दे गयी।

वह उसे उठा कर घर ले आया और अपने पिता से बोला — "देखो न पिता जी कितनी सुन्दर चिड़िया है।"

पिता चिल्लाया — "यह चिड़िया किसी काम की नहीं। सारी चिड़ियें, जानवर और आदमी शरारती होते हैं। फेंक दे इसे।"

अपने चेहरे पर कुबड़े ने एक नकली चेहरा पहन रखा था जिसके आँख वाले छेदों में से उसकी आँखें चमक रही थीं। उसके सिर पर बादलों की एक टोकरी रखी थी जो काली रंगी हुई थी। उसमें पीले रंग की धारियाँ थीं जो बिजली की सूचक थीं। उस टोकरी के दोनों ओर भैसों के सींग निकले हुए थे।

बेटा फिर बोला — "नहीं पिता जी, यह बहुत ही अच्छी चिड़िया है।"

पर उसका पिता फिर चिल्लाया — "नहीं, इसे वहीं छोड़ कर आओ जहॉ से तुम इसको उठा कर लाये थे।"

और वह डरा हुआ लड़का बेचारा उस चिड़िया को वहीं छोड़ आया जहॉ से वह उसे उठा कर लाया था।

तुरन्त ही चिड़िया ने कायोटी का रूप बदला और अपने डेरे पर आ गया। कायोटी आ कर अपने आदमियों से बोला — "मेरी यह योजना तो बेकार हो गयी मगर कोई बात नहीं। मैं कल फिर कोशिश करूँगा। हो सकता है कि एक छोटा जानवर चिड़िया से ज़्यादा अच्छा निकले।"

सो अगले दिन जब कुबड़े का बेटा नदी पर पानी भरने गया तो उसको एक कुत्ते का पिल्ला[13] मिला। कुबड़े के बेटे को वह पिल्ला बहुत पसन्द आया सो वह उसको घर ले आया और अपने पिता से बोला — "देखिये पिता जी, यह पिल्ला कितना सुन्दर है।"

उसके पिता ने उसको फिर डॉटा — "यह सब क्या बेवकूफी है? यह बिल्कुल बेकार है। अगर तुम इसको बाहर छोड़ कर नहीं आओगे तो मैं इसे अपने डंडे से मार दूँगा।"

पर इस बार कुबड़े का बेटा डरा नहीं। वह कुत्ते को अपने सीने से चिपका कर रोता हुआ घर के बाहर भागने लगा।

[13] Translated for the word "Puppy"

उसके पिता को दया आ गयी और वह बोला — "ठीक है ठीक है। पर पहले मुझे यह तो देख लेने दो कि यह कुत्ता ही है या कुछ और है। दुनियॉ के सारे जानवर बहुत चालाक होते हैं।"

यह कहता हुआ वह रसोई घर में गया और एक जलता हुआ कोयला उठा लाया। वह उस कोयले को पिल्ले की ऑखों के पास लाता गया जब तक कि वह पिल्ला तीन बार नहीं भौंका।

अब कुबड़े को विश्वास हो गया कि वह असली कुत्ता था सो वह अपने बेटे से बोला — "यह असली कुत्ता है तुम इसको भैसों वाले बाड़े में रख सकते हो, घर में नहीं रखना।"

कायोटी यही तो चाहता था। जैसे ही रात हुई और कुबड़ा और उसका बेटा सो गये तो कायोटी ने घर का पिछला दरवाजा खोला और सारी भैंसों में जितनी ज़ोर से भौंक सकता था भौंकता हुआ चारों तरफ को घूम गया।

कुत्ते के भौंकने से सारी भैंसें डर गयीं क्योंकि उन्होंने पहले कभी कुत्ते के भौंकने की आवाज़ ही नहीं सुनी थी।

जब कायोटी उनकी एड़ी में दॉत मारता हुआ इधर से उधर घूमने लगा तो भैंसें रस्सी तुड़ा कर कुबड़े के घर में से होती हुई बाहर भाग निकलीं। भैंसों का बाड़ा खाली हो गया।

कुबड़े का बेटा अपना पिल्ला ढूँढने लगा मगर सारी भैंसों के भाग जाने के बावजूद उसको अपना कुत्ते का पिल्ला नहीं मिला।

"मेरा कुत्ता कहाँ गया?" कह कर वह रोता हुआ अपने कुत्ते को ढूँढने लगा।

कुबड़ा दुखी हो कर बोला — "बेटे, वह कुत्ता नहीं था, वह चालाक कायोटी था। उसी ने हमारी सारी भैंसें भगा लीं हैं।"

इस प्रकार कुबड़े की सारी भैंसें बाड़े में से भाग कर धरती पर फैल गयीं।

5 सफेद कौए ने जानवरों को छिपाया[14]

कायोटी की अमेरिका की भैसों को धरती पर लाने की एक और लोक कथा।

अमेरिका के मैदानों में एक कैम्प था जहॉ के शिकारियों को शिकार ही नहीं मिल पाता था। बहुत सोचने पर भी वे यह नहीं जान सके कि ऐसा क्यों होता है।

जब भी वे कभी बाहर शिकार के लिये निकलते तो सारे शिकार इधर उधर बिखर जाते और ऐसी जगह जा कर छिप जाते जहॉ उनको मारना मुश्किल हो जाता। इससे वे लोग भूखे मरने लगे।

पर इन लोगों को यह पता नहीं था कि वहॉ कोई था जो वहॉ के आस पास के भैंसों और हिरनों को यह कह आता था कि शिकारी लोग आ रहे हैं तुम सब छिप जाओ।

इस कैम्प में एक आदमी ऐसा भी था जो अपने आपको सफेद कौए में बदल सकता था। जब ये शिकारी लोग शिकार के लिये निकलते थे तो वह इधर उधर चला जाता था और सचमुच में ही सारे जानवरों को यह कह आता था कि वे छिप जायें क्योंकि शिकारी शिकार करने के लिये आ रहे हैं।

---

[14] White Crow Hides the Animals – a folktale from Native Americans – Kiowa people, North America. Adapted from the Web Site :
http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/WhiteCrowHidesTheAnimals-Kiowa.html
[In my own opinion this story should have been entitled as “Kauaa Kaalaa Kyon?”]

यह आदमी फिर वापस कैम्प में आ जाता था और अपने आपको आदमी में बदल लेता था।

भूखे लोगों ने शिकार ढूँढने के लिये कई बार अपने कैम्प को कई और दिशाओं में भी लगाया पर यह सफेद कौआ कहीं नहीं गया। वह वहीं रहा जहाँ वह रहता चला आ रहा था।

उसके रहने की जगह के नीचे एक गड्ढा था। सारे भैंसे वहीं रहते थे सो उसको अपना खाना वहीं मिल जाता था। जब लोग अपने कैम्पों से लौट कर आते तो उस आदमी को वहीं रहते पाते।

वह आदमी उन लोगों से पूछता — "तुम लोग वापस क्यों आ गये? मेरे पास तो खाना बिल्कुल भी नहीं है। मैं भी उन्हीं परेशानियों का सामना कर रहा हूँ जिन परेशानियों का सामना तुम लोग कर रहे हो। जबसे तुम लोग गये हो मैंने भी खाना नहीं खाया है।"

एक दिन कुछ लोग डंडियों से एक खेल खेल रहे थे कि वह आदमी उनके पास आया। जहाँ वह आदमी खड़ा था उन लोगों को वहाँ से भैंसों की चर्बी की खुशबू आयी।

फिर उन्होंने देखा कि वह आदमी भैंसे की बड़ी सुन्दर खाल पहने था पर उसने उस खाल का नयापन छिपाने के लिये उसको उलटा कर के पहन रखा था। उसके पास एक पूजा की डंडी भी थी जिस पर भैंसे की चर्बी लगी हुई थी।

सफेद कौए वाले आदमी को उनका अपनी तरफ इस तरह से देखना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। उन आदमियों को इस तरह से अपनी तरफ देखते हुए देख कर वह आदमी वहॉ से चला गया कि कहीं ऐसा न हो कि वे लोग उससे कोई सवाल पूछ लें।

कायोटी[15] भी उसी गॉव में रहता था। उस रात को कायोटी ने उन सब लोगों को बुलाया और उन सबसे कहा कि वह उस सफेद कौए वाले आदमी के घर के चारों तरफ निगाह रखेगा और उन लोगों को यह भी बतायेगा कि उसने उसके बारे में क्या मालूम किया।

सो कायोटी ने कुछ देर तो उस सफेद कौए के घर पर निगाह रखी फिर आ कर उन लोगों को बताया कि उसको दो आदमी चाहिये जिनकी नजर तेज़ हो। सो उल्लू और ड्रैगन फ्लाई दो लोग इस काम के लिये चुने गये।

कायोटी ने उन दोनों को घास पर लेट जाने के लिये कहा और सफेद कौए के ऊपर नजर रखने के लिये कहा कि वह यह देखें कि वह कब आता है कब जाता है कहॉ जाता है।

ड्रैगन फ्लाई ने तो उसको इतना ज़्यादा देखा कि उसकी तो ऑखें ही बाहर निकल आयीं।

---

[15] Coyote, pronounced as “Kaayotee”, is a small size desert wolf who is a hero of native American folktales. See its picture above.

उल्लू की ऑखों पर भी इतना ज़ोर पड़ा कि उसकी आखें बहुत ज़्यादा बड़ी हो गयीं। पर उल्लू तब तक उसको देखता रहा जब तक कि वह आदमी जमीन के अन्दर नहीं चला गया।

उल्लू ने वापस आ कर कायोटी को बताया कि वह तो जमीन के नीचे गया था। तो कायोटी ने लोगों से कहा कि वे अपने सब आदमियों को इकट्ठा करें और यह घोषणा कर दें कि वे अपना कैम्प वहॉ से हटा कर कहीं और लगा रहे हैं।

उसके बाद कायोटी अपने आपको एक कुत्ते के रूप में बदल लेगा और वे लोग उसे वहीं छोड़ जायेंगे। कायोटी ने उनको यह भी बताया कि उस सफेद कौए वाले आदमी की एक बेटी भी थी।

जब सब लोग चले जायेंगे तो उसकी वह बेटी चारों तरफ देखेगी कि कोई पीछे कुछ छोड़ तो नहीं गया और उसे मैं मिल जाऊॅगा। फिर देखना कि क्या होता है।

अगले दिन सब लोग वहॉ से चले गये और कायोटी ने एक कुत्ते का रूप रख लिया पर वह अपने मुॅह पर कुत्ते की मूॅछ लगाना भूल गया। सफेद कौए की छोटी बेटी जब आयी तो उसने उस कुत्ते को देखा। वह कुत्ता उसको बहुत अच्छा लगा और वह उसको अपने घर ले गयी।

जब सफेद कौए वाला आदमी अपने घर आया तो उसने उस कुत्ते को देखना चाहा। उसकी बेटी ने उसको कुत्ता दिखाया तो उसने देखा कि उस कुत्ते की तो मूॅछें हीं नहीं थीं।

उसने अपनी बेटी से कहा कि उसको उस कुत्ते से बहुत डर लग रहा था क्योंकि वह कुत्ता नहीं था बल्कि कुत्ते की शक्ल में कोई आदमी था।

उसने अपनी बेटी से उस कुत्ते को बाहर फेंकने के लिये कहा पर वह लड़की उस कुत्ते को रखना चाहती थी इसलिये उसने उस कुत्ते को बाहर फेंकने से इनकार कर दिया।

जब उसका पिता सब जानवरों को शिकारियों के बारे में बताने के लिये चला गया तो उस आदमी की बेटी ने उस कुत्ते को एक मॉस का टुकड़ा भी खिलाया।

एक दिन जब उसका पिता बाहर गया हुआ था तो उस लड़की ने उस गड्ढे के ऊपर से पत्थर हटाया जिसमें नीचे भैंसें रहतीं थीं। उसने कुत्ते को उस गड्ढे में नीचे देखने के लिये बुलाया पर कुत्ते ने ऐसा नाटक किया जैसे वह बहुत डर रहा हो।

उसने उसे फिर बुलाया — "यहॉ आओ तो ओ कुत्ते यहॉ देखो हमारे पास क्या है।" जब उसने यह कहा तो कायोटी उस लड़की के पास आया और अचानक उस गड्ढे में कूद गया।

अब उसने अपने आपको एक आदमी के रूप में बदल लिया और भैंसों को वहॉ से हॉकने लगा। वह चिल्लाया — "जाओ और जा कर सारी दुनियॉ में फैल जाओ।"

भैंसें तुरन्त ही एक नदी की तरह उस गड्ढे में से बाहर निकल आयीं और चारों तरफ दौड़ गयीं।

कायोटी फिर एक छोटा कीड़ा बन गया और आखिरी भैंस की पूँछ से चिपक गया और इस तरह वह भी उस गड्ढे से बाहर निकल गया।

वह लड़की एक डंडा लिये बाहर खड़ी उस कुत्ते का इन्तजार कर रही थी पर उसको कोई कुत्ता दिखायी ही नहीं दिया। वह भैंस भी उस लड़की के पास से गुजर गयी जिसकी पूँछ पर कायोटी कीड़ा बना चिपका हुआ था पर उसको कुत्ता कहीं दिखायी नहीं दिया।

जब सारी भेंसें उस सफेद कौए के घर से निकल गयीं और उसके घर से काफी दूर आगे तक निकल गयीं तो कायोटी फिर से आदमी बन गया और भैंसों को चिल्लाया — "फैल जाओ, फैल जाओ, चारों तरफ फैल जाओ।"

जब सफेद कौआ अपने घर लौट कर आया और देखा कि उसके पीछे क्या हो गया है तो उसने अपनी बेटी से कहा — "देखो न तुमने क्या कर दिया है। मुझे पहले से ही डर था कि ऐसा कुछ होगा। अब हम लोगों को बहुत परेशानी होगी।"

उधर कायोटी अपने लोगों में लौट आया और फिर से उन लोगों ने भैसों को खाना शुरू कर दिया।

इस बात से सफेद कौआ बहुत गुस्सा हो गया। उसने फिर से भैसों और दूसरे जानवरों को शिकारियों से दूर भगा दिया। इससे शिकारी लोग फिर से भूखे रहने लगे।

सफेद कौआ उन लोगों को यह बताना चाहता था कि वह उन लोगों की ज़िन्दगी में और भी मुश्किल पैदा कर देना चाहता था सो वह उनके कैम्प के ऊपर से यह कहते हुए उड़ा — "मैं तुम लोगों को यह बताना चाहता हूँ कि मैंने ही भैंसों को तुम्हारा शिकार होने से बचा कर रखा था। तुम लोग अब किसी मॉस वाले जानवर को नहीं मार पाओगे।"

उस रात कायोटी ने फिर से अपने लोगों को बुलाया और एक तरकीब सुझायी। उसने कहा कि उस तरकीब को उनको वैसे ही मानना पड़ेगा जैसा कि वह बतायेगा।

वे अपने कैम्प में यह घोषणा करेंगे कि वे कुछ घाटी दूर के एक जंगल में जा रहे हैं। कायोटी एक हिरन का रूप रख लेगा और एक बड़ी सी झाड़ी में छिप जायेगा जहॉ सफेद कौआ उसको न देख सके।

जब वे लोग वहॉ से जायेंगे तो वे उसको मार देंगे पर वे उसका ढॉचा और उसके सीगों के साथ उसका सिर वहीं छोड़ जायेंगे। उसके बाद वह देख लेगा।

सो अगले दिन लोग उसी जंगल में चले गये जहॉ कायोटी ने उनको जाने के लिये कहा था। कुछ लोग शिकार की खोज में चले गये। एक शिकारी उस हिरन की खोज में चला गया।

उस शिकारी ने हिरन को ढूँढ लिया और मार दिया। उन्होंने उस हिरन को उसी तरह से काट दिया जैसा कि कायोटी ने उनको काटने के लिये बताया था।

जब शिकारी लोग उस हिरन का पीछा कर रहे थे तो सफेद कौआ हिरन के ऊपर से उड़ा और बोला — "मुझे आश्चर्य है कि मैंने तुमको कैसे छोड़ दिया। मुझे तुमसे भी यह कह देना चाहिये था कि शिकारी आ रहे हैं तुम छिप जाओ। यह मेरी ही गलती है। पर तुम तो खूब तेज़ भाग सकते हो तुम अभी भी भाग जाओ। शिकारी आ रहे हैं।"

जब शिकारी चले गये तो उस आदमी ने उस हिरन का केवल ढाँचा ही पाया। उसने उसके सींगों को आग लगायी और अपने मन में सोचा — "मुझे मालूम है कि यह हिरन नहीं है। मुझे यह भी मालूम है कि कायोटी ने पहले मेरे साथ क्या किया था।

और यह भी कायोटी ही है जो फिर से वेष बदल कर आया है। मैं इसको अपने आप ही जाँचूँगा।"

यह सोच कर वह उस हिरन के सिर पर खड़ा हो गया और उस हिरन की नाक को अपनी तेज़ चोंच से मारना शुरू किया और बोलता रहा — "मुझे मालूम है कि तुम कायोटी हो, मुझे मालूम है कि तुम कायोटी हो।"

वह उसको मारता ही रहा मारता ही रहा। वह बस तब ही रुका जब कायोटी रोने वाला हो रहा था।

उस आदमी ने सोचा अब मैं इसको दूसरी तरफ मारता हूँ सो वह पीछे की तरफ चला और उसकी पीछे वाली टॉग के घुटने पर अपनी चोंच से मारना शुरू किया।

इस बार भी वह उसे तब तक मारता रहा जब तक वह बस चिल्लाने ही वाला था।

सफेद कौए ने फिर सोचा — "तुम हिरन हो सकते हो पर मुझे आश्चर्य है कि मैंने तुमको छोड़ कैसे दिया।"

फिर उसने उसकी पसलियों से उसका बचा हुआ मॉस निकालने की सोची। सो जब उसने उसकी पसलियों में अपना सिर घुसाया तो कायोटी ने अपनी पसलियॉ बन्द कर लीं और सफेद कौए को पकड़ लिया।

फिर कायोटी आदमी के रूप में बदल गया और बोला — "आज मैंने तुमको पकड़ लिया है।"

सफेद कौआ बोला — "कायोटी, मेहरबानी कर के मुझे छोड़ दो। मैं फिर कभी कोई बुरा काम नहीं करूँगा। मैं सबके साथ भलाई करूँगा। मेहरबानी कर के मुझे छोड़ दो।"

आदमी लोग उन दोनों को दूर से देख रहे थे। जब उन्होंने देखा कि कायोटी ने सफेद कौए को पकड़ लिया है तो वे खुशी से चिल्लाने लगे।

कायोटी सफेद कौए से फिर बोला — "अब जब मैंने तुमको पकड़ लिया है तो अब मैं तुमको कैम्प ले जाऊँगा और अब कैम्प

वाले लोग ही तुम्हारे साथ जो वे चाहेंगे वह करेंगे।" सो वह उसको कैम्प ले गया।

वहाँ आदमियों ने कहा — "यही है वह जिसने हमें इतना तंग किया है और भूखा रखा है। पर अब जब यह हमारे पास है तो हम इसका क्या करें?"

एक बूढ़ी मकड़ी बोली — "इसको मुझे दे दो। मैं इसको देखना चाहती हूँ जिसने हम सबको भूखा मारा है।"

जब उस बूढ़ी मकड़ी ने सफेद कौए को पकड़ा तो वह तुरन्त ही उसके चारों तरफ जाला बुनने लगी। कोई इस बात को देख ही नहीं पाया कि वह बूढ़ी मकड़ी क्या कर रही थी।

जब वह बूढ़ी मकड़ी जाला बुन रही थी तो वह सफेद कौआ उसका जाल तुड़ा कर हवा में उड़ गया। उसने कैम्प का एक चक्कर लगाया और हँसते हुए बोला — "इस बार मैं तुम लोगों के ऊपर कोई दया नहीं दिखाऊँगा और तुम लोगों को वाकई में भूखा मारूँगा।"

कायोटी ने उस बूढ़ी मकड़ी से कहा — "मैं लोगों से कह दूँगा कि वह इस सफेद कौए को छोड़ देने के बदले में तुमको मार दें।"

बूढ़ी मकड़ी बोली — "यह सफेद कौआ नहीं जानता कि वह क्या कह रहा है। मैं पकड़ती हूँ उसे।"

कह कर उसने सफेद कौए को अपनी तरफ खींचना शुरू किया जैसे वह उसे किसी डोरी से खींच रही हो।

सफेद कौआ चिल्लाया — "अरे मैं तो मजाक कर रहा था। मैं सबसे ठीक से बर्ताव करूँगा। मुझ पर दया करो।"

पर वह बूढ़ी मकड़ी उसको खींचती गयी खींचती गयी जब तक कि वह सफेद कौआ उसके हाथ में नहीं आ गया।

फिर उसने उस कौए को कायोटी को दे दिया और बोली — "अब जैसा तुम इसके साथ करना चाहते हो वैसा करो।"

कायोटी ने लोगों को बुलाया और आग जलाने वाली लकड़ी लाने के लिये कहा। फिर उसने उस लकड़ी में आग लगायी और उस सफेद कौए को उस आग में डाल दिया और तब तक जलने दिया जब तक कि वह जल कर बिल्कुल काला नहीं हो गया।

फिर कायोटी उस सफेद कौए से बोला — "मैं अब ऐसा कुछ करने वाला हूँ ताकि तुम फिर अपनी मनमानी न कर सको। तुम आज से चिड़िया बन जाओ और खाने के टुकड़े ढूँढते फिरो और हर चीज़ से डरो।"

सो फिर उस कौए का यही हाल हुआ। वह काला हो गया, वह चिड़िया हो गया और अब वह खाने के टुकड़ों के लिये इधर उधर मारा मारा फिरता है।

6 कायोटी और मौत का जन्म[16]

जब यह दुनियॉ शुरू ही हुई थी तब यहॉ मौत जैसी कोई चीज़ नहीं थी। सब लोग ज़िन्दा रहते थे और बस रहे चले जाते थे।

अब जब कोई आदमी मरता नहीं था तो धरती पर बहुत सारे आदमी हो गये और इतने सारे आदमी हो गये कि धरती उनसे पूरी तरह से भर गयी थी और अब उस पर और लोगों के रहने की जगह ही नहीं रह गयी।

यह देख कर सरदारों ने अपनी काउन्सिल की एक मीटिंग बुलायी कि ऐसी दशा में उनको क्या करना चाहिये। एक आदमी उठा और बोला कि उसके विचार से यही प्लान सबसे अच्छा रहेगा कि लोगों को मरना चाहिये और फिर कुछ दिन बाद फिर से वापस आ जाना चाहिये।

जैसे ही वह आदमी यह कह कर बैठा कि कायोटी[17] कूद कर खड़ा हुआ और बोला कि उसके विचार से तो आदमी को हमेशा के लिये ही मर जाना चाहिये, केवल कुछ समय के लिये ही क्यों।

---

[16] Coyote and the Origin of the Death – a Caddo legend from native Americans, North America. Adapted from the Web Site :
http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/CoyoteAndTheOriginOfDeath-Caddo.html
This Web Site claims that it records more than 1,400 mythological tales and folktales from various Native American tribes from North America.

[17] Coyote, pronounced as Kaa-yo-tee, is a small desert wolf and a great hero of Native Americans' folktales.

उसने यह भी कहा कि यह छोटी सी दुनियॉ बहुत सारे लोगों को ज़िन्दा रखने के लिये काफी नहीं है। और अगर मरे हुए लोग फिर से वापस आ गये तो सब लोगों के लिये खाना भी काफी नहीं हो पायेगा।

वहॉ बैठे दूसरे लोगों ने इस पर अपना कुछ ऐतराज प्रगट किया। वे बोले कि वे नहीं चाहते थे कि उनके रिश्तेदार हमेशा के लिये उनकी ऑखों के सामने से दूर हो जायें। क्योंकि वे फिर इनके लिये हमेशा के लिये रोते रहेंगे और दुखी रहेंगे और दुनियॉ में वे खुश नहीं रह पायेंगे।

सभी लोगों के सिवाय केवल कायोटी ही इस बात के पक्ष में था कि लोगों को मरना ही चाहिये और कुछ दिन के लिये यहॉ से दूर रहना चाहिये। हालॉकि बाद में वे यहॉ वापस आ सकते थे।

तब उनके डाक्टरों ने घास का एक बहुत बड़ा घर बनाया जिसका दरवाजा पूर्व की तरफ था। जब उन्होंने उसे पूरा कर लिया तो उन्होंने अपनी जाति के सब लोगों को बुलाया और उनसे कहा कि जो लोग मर जायेंगे उनको इस दवाघर में फिर से ज़िन्दा कर दिया जायेगा।

डाक्टरों के सरदार ने कहा कि वे मरे हुए आदमी की आत्मा को बुलाने के लिये इस घास के घर में एक गीत गायेंगे और जब वह आत्मा आ जायेगी तब वे उस मरे हुए आदमी को ज़िन्दा कर देंगे।

यह सुन कर सभी लोग खुश हो गये क्योंकि वे लोग यह देखने के लिये उत्सुक थे कि एक मरा हुआ आदमी कैसे फिर से ज़िन्दा हो कर उनके बीच में आ कर रहता है।

जब पहला आदमी मरा तो सारे डाक्टर उस घास के घर में जमा हुए और उन्होंने उसकी आत्मा को बुलाने के लिये एक गीत गाया। करीब दस दिन में पश्चिम से एक बवंडर[18] आया और उसने उस घास के घर का एक चक्कर काटा।

कायोटी यह सब देख रहा था। जैसे ही वह बवंडर उस घर के अन्दर घुसने वाला था कायोटी ने तुरन्त ही घर का दरवाजा बन्द कर दिया। बवंडर ने जब घर का दरवाजा बन्द पाया तो वह वहाँ से लौट गया।

इस तरह से कायोटी ने मौत को हमेशा के लिये ज़िन्दगी का एक हिस्सा बना दिया और उसी समय से लोग अपने मरे हुए लोगों के लिये रोने लगे और दुखी रहने लगे।

अब जब भी कभी किसी को ऐसा कोई बवंडर दिखायी देता है और या फिर हवा की सीटी सुनायी देती है तो वह कहता है "कोई आत्मा इधर उधर घूम रही है।"

[18] Translated for the word "Whirlwind" – it is a very fast and strong moving wind in circular motion. See its picture above.

उधर जिस दिन से कायोटी ने उस घास के घर का दरवाजा बन्द किया है मरे हुए आदमियों की आत्माऐं किसी जगह जाने की तलाश में इस धरती पर चारों तरफ घूमती रहती हैं। आखीर में उनको फिर आत्माओं की दुनियॉ में ही जाना पड़ता है।

दरवाजा बन्द कर के कायोटी भाग गया और फिर कभी वापस नहीं आया क्योंकि जब उसने महसूस किया कि उसने क्या कर दिया तो वह डर गया।

उसके बाद से वह हमेशा ही कभी अपने एक कन्धे के पीछे से और कभी दूसरे कन्धे के पीछे से देखते हुए भागता ही रहता है। उसको डर है कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा।

और इसीलिये वह हमेशा से भूखा भी रहता है क्योंकि उसको कोई खाना ही नहीं देता।

7 कायोटी और लुढ़कती हुई चट्टान[19]

वसन्त का मौसम था और कायोटी और लोमड़ा जंगल में घूम घूम कर मौसम का आनन्द ले रहे थे कि चलते चलते वे एक ऐसी जगह पर आये जहॉ एक बड़ी सी चिकनी चट्टान पड़ी हुई थी।

कायोटी ने अपना कम्बल उस चट्टान पर रख दिया और दोनों वहॉ बैठ कर आराम करने लगे।

कुछ समय बाद धूप तेज़ हो गयी तो कायोटी को लगा कि अब उसे इस कम्बल की जरूरत नहीं है सो उसने अपना वह कम्बल उस चट्टान को देते हुए उससे कहा — "क्योंकि तुम बहुत गरीब हो और तुमने मुझे यहॉ आराम करने दिया इसलिये मैं अपना यह कम्बल तुमको देता हूँ। तुम इसको हमेशा अपने पास रखना।"

और कायोटी और लोमड़ा दोनों फिर घूमने चल दिये।

वे लोग अधिक दूर नहीं जा पाये थे कि इतने में ही सूरज छिप गया, बादल घिर आये और तेज़ बारिश होने लगी।

कायोटी लोमड़े से बोला — "लोमड़े भाई, यह तो बारिश शुरू हो गयी। तुम दौड़ कर जाओ और उस चट्टान से मेरा वह कम्बल

[19] Coyote and the Rolling Rock – a folktale from North-Western Native American Salish Blackfoot People. North America.
[My Note : A similar folktale of Coyote is given at the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/Iktome-Coyote-And-The-Rock-Sioux.html with his friend Iktomi, instead of fox.]

मॉग लाओ जो मैंने उसे अभी अभी दिया था। हम लोग उसको ओढ़ कर अपने आपको इस बारिश से बचा सकेंगे।"

लोमड़ा भागा भागा उस चट्टान के पास गया और बोला — "कायोटी को अपना वाला कम्बल वापस चाहिये।"

चट्टान बोली — "वह कम्बल अब मैं तुम्हें कैसे दे सकती हूँ वह कम्बल तो कायोटी ने मुझे भेंट में दिया था और वह तो अब मेरा है। उससे कहना कि वह कम्बल अब उसे नहीं मिलेगा।"

लोमड़ा कायोटी के पास वापस आया और चट्टान ने उससे जो कुछ भी कहा था वह वैसा का वैसा ही उसको आ कर बता दिया।

कायोटी बोला — "अरे, वह तो एक बहुत ही बेकार चट्टान निकली। मैं तो उस कम्बल का इस्तेमाल केवल बारिश होने तक करना चाहता था। मैं कोई उससे वह कम्बल हमेशा के लिये थोड़े ही मॉग रहा था।" उसको उस चट्टान पर बहुत गुस्सा आ रहा था।

गुस्से में भरे भरे वह चट्टान के पास गया और उस चट्टान से यह कह कर अपना कम्बल छीन कर ले आया — "मुझे यह कम्बल अपने आपको बारिश से बचाने के लिये चाहिये। तुमको इस कम्बल की क्या जरूरत है तुम तो वैसे भी धूप बारिश बर्फ सभी मौसमों में ऐसे ही पड़ी रहती हो।"

सो कायोटी ओर लोमड़े दोनों ने कम्बल ओढ़ कर अपने आप को बारिश से बचा लिया। थोड़ी देर बाद बारिश रुक गयी और बारिश रुक जाने पर वे लोग फिर से घूमने चल दिये।

कुछ दूर जाने पर उनको लगा कि कोई चीज़ लुढ़कती हुई चली आ रही है। कायोटी बोला — "लोमड़े भाई, ज़रा सुनना तो यह किस चीज़ की आवाज है?"

लोमड़ा तुरन्त ही एक पहाड़ी पर चढ़ गया और तुरन्त ही उतर भी आया और बोला — "कायोटी भाई, भागो□वह बड़ी चट्टान तो इधर ही आ रही है।"

कायोटी ने देखा कि सचमुच में ही वह बड़ी चट्टान शोर मचाती चली आ रही है। दोनों जल्दी से भागे मगर फिर भी लोमड़े की पूँछ उस चट्टान से छू गयी। तबसे आज तक उसकी पूँछ की नोक सफेद चली आ रही है।

इतने में कायोटी भाग कर नदी में कूद पड़ा। वह तैर कर नदी के पार चला गया। उसको लगा कि वह वहाँ पर सुरक्षित रहेगा क्योंकि चट्टान तो तैर नहीं सकती। वह तो नदी में डूब जायेगी। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। कायोटी ने देखा कि चट्टान तो नदी में गिर कर भी तैरने लगी।

यह देख कर कायोटी फिर भागा और अबकी बार वह जंगल की तरफ भाग लिया। वहाँ जा कर वह एक पेड़ की छाँह में लेट गया। उसने अपनी टाँगें फैलायीं ही थीं कि उसको पेड़ों के गिरने की आवाज आने लगी।

वह चट्टान अभी भी लुढ़कती हुई चली आ रही थी। वह फिर भागा और अबकी बार वह खुले मैदान की ओर भाग लिया।

वहाँ कुछ भालू इधर उधर घूम रहे थे। कायोटी उनसे बोला कि वे उसकी चट्टान से बचने में सहायता करें। भालू बोले "ठीक है हम तुम्हारी सहायता करेंगे।" परन्तु जब चट्टान आयी तो भालुओं को कुचलती हुई आगे बढ़ने लगी। कायोटी फिर भागा।

कायोटी और भागा तो उसे आगे जा कर कुछ भैंसे मिले। उसने उन भैंसों से भी चट्टान से बचने की सहायता माँगी। सो भैंसों ने मिल कर अपने सींगों से उस चट्टान को रोकने की कोशिश की परन्तु वह चट्टान तो उनके सिरों को कुचलती हुई आगे बढ़ चली।

कायोटी फिर भागा। आगे जा कर उसे कुछ साँप मिले। उसने उन साँपों से भी सहायता माँगी परन्तु उस चट्टान ने तो साँपों को भी कुचल दिया।

कायोटी फिर भाग लिया पर अब वह चट्टान कायोटी के पीछे पीछे भागती हुई उसके बहुत पास तक आ गयी थी कि इतने में उसे सड़क के दोनों तरफ दो जादूगरनियाँ खड़ी दिखायी दीं। कायोटी उनसे भी सहायता की पुकार लगा कर दौड़ा चला गया।

उन जादूगरनियों ने अपने जादू के डंडे उस चट्टान पर मारे और वह चट्टान टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गयी।

दौड़ते दौड़ते कायोटी एक बड़े कैम्प में पहुँच गया। वह अब भागते भागते थक गया था सो वह वहाँ साँस लेने के लिये रुक गया और एक जगह बैठ गया।

वहाँ बहुत सारी जादूगरनियाँ इधर से उधर घूम रहीं थीं। उनमें से एक को कायोटी ने यह कहते हुए सुना — "यह बहुत अच्छा और मोटा है क्यों न हम इसे अभी खा लें।"

यह सुन कर कायोटी ने बहाना किया कि जैसे उसने कुछ सुना ही न हो परन्तु उसका ध्यान वहीं लगा रहा। वे अन्दर अपने पकाने के बर्तन ठीक कर रही थीं। कायोटी ने तुरन्त ही उनके बाहर रखे पानी वाले बर्तनों का पानी बिखेर दिया।

वे जब बाहर आयीं तो वह उनसे बोला — "मुझे बहुत प्यास लगी है क्या आपके पास थोड़ा सा पीने का पानी होगा?"

एक जादूगरनी बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। हमारे पास तो बहुत पानी है।" पर जब उसने अपने पानी के बर्तन देखे तो वे तो सब के सब खाली पड़े थे।

कायोटी बोला — "कोई बात नहीं, उधर एक छोटी सी नदी है मैं उधर से आपके लिये पानी ले आता हूँ।" कह कर उसने दो बालटियाँ उठायीं और नदी की ओर चल दिया।

नदी पर पहुँच कर उसने बालटियाँ तो वहीं छोड़ दीं और वहाँ से जान बचा कर भाग निकला।

इधर जब कायोटी काफी देर तक नहीं आया तो उन्होंने समझ लिया कि कायोटी ने उनको बेवकूफ बनाया है। बस फिर क्या था वे दोनों आपस में ही एक दूसरे को दोषी ठहराते हुए लड़ने लगीं और इतनी लड़ीं कि आखिर में दोनों आपस में लड़ कर मर गयीं।

जब तक चट्टान वहाँ तक आयी तब तक तो कायोटी अपनी जान बचा कर बहुत दूर जा चुका था।

8 स्कंक ने कायोटी को पछाड़ा[20]

एक दिन की बात है कि कायोटी को बहुत भूख लगी थी। वह खाने की तलाश में इधर उधर घूम रहा था कि उसको एक स्कंक[21] मिल गया।

कायोटी स्कंक से बोला — "स्कंक भाई, तुम भूखे लगते हो और मुझे भी भूख लगी है। अगर मैं तुम्हारे लिये कुछ खाने का इन्तजाम करूँ तो क्या तुम मेरी चाल में मेरी सहायता करोगे?"

स्कंक बोला — "भला यह भी कोई पूछने की बात है कायोटी भाई? तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा।"

इस पर कायोटी बोला — "देखो, उस पहाड़ी के उस पार गिलहरियों का एक गॉव है। तुम वहॉ चल कर मरे हुए का नाटक करो मैं बाद में पहुँचता हूँ। फिर उनसे कहूँगा कि आओ अपने मरे हुए दुश्मन की खुशी में नाचते हैं।"

स्कंक की समझ में कुछ भी नहीं आया कि इस नाटक से खाने का इन्तजाम कैसे होगा पर कायोटी बोला — "तुम चलो तो सही और मरने का नाटक करो बाकी सब मैं देख लूँगा।"

---

[20] Skunk Outwits Coyote - a folktale from Comanche people, Native American Indians, North America.

[21] Skunk is a squirrel-like animal. See its picture above.

स्कंक राजी हो गया। वह गिलहरियों के गॉव में पहुॅचा और वहॉ जा कर मरा हुआ सा लेट गया। कुछ ही देर में कायोटी भी वहॉ आ पहुॅचा। उसने देखा कि बहुत सारी गिलहरियॉ अपने अपने बिलों से निकल कर बाहर खेल रहीं हैं।

इतने में कायोटी ने उनसे ज़ोर से पुकार कर कहा — "देखो न गिलहरियों, हमारा दुश्मन तो मर चुका है। क्यों न हम इसके चारों ओर नाच नाच कर खुशियॉ मनायें।"

मूर्ख गिलहरियों ने वैसा ही किया जैसा कायोटी ने उनसे करने के लिये कहा। कायोटी बोला — "हम लोग एक बड़ा सा गोला बना कर ऑखें बन्द कर के नाचेंगे। अगर किसी ने ऑखें खोलीं तो उसके साथ तुरन्त ही कुछ बुरा होगा।"

ऐसा ही हुआ। सब गिलहरियों ने ऑखें बन्द कर के नाचना शुरू कर दिया। उधर तुरन्त ही कायोटी ने उनमें से एक गिलहरी को मार दिया और बोला, "अब अपनी ऑखें खोलो।"

जब सारी गिलहरियों ने अपनी ऑखें खोलीं तो उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनमें से उनकी एक प्रिय गिलहरी मरी पड़ी थी।

कायोटी तुरन्त बोला — "देखो न इस बेचारी ने नाच के बीच में अपनी ऑख खोलीं तो यह मर गयी। अब तुम लोग फिर अपनी ऑख बन्द कर के नाचो। और हॉ याद रखना अगर बीच में तुममें से किसी ने भी अपनी ऑखें खोली तो वह मर जायेगी।"

सो उन गिलहरियों ने अपनी अपनी ऑखें फिर से बन्द कर लीं और फिर से नाचना शुरू कर दिया। कायोटी ने एक एक कर के उन गिलहरियों को मारना शुरू कर दिया।

उनमें से एक गिलहरी को कुछ शक सा हुआ तो उसने बीच में थोड़ी सी ऑख खोल कर देखा तो उसको पता चल गया कि कायोटी ही उन सबको मार रहा था।

बस, उसने शोर मचा दिया और सारी गिलहरियॉ नाच छोड़ कर अपने अपने बिलों में घुस गयीं। स्कंक भी उठ कर खड़ा हो गया। वह खुश था कि कायोटी की यह चाल कितनी आसानी से काम कर गयी।

दोनों ने मिल कर लकड़ियॉ इकट्ठी कीं और आग जलायी। फिर उस आग में उन्होंने उन गिलहरियों को भूनना शुरू किया।

मॉस की सुगन्ध ने कायोटी को पागल सा कर दिया। उसने सोचा कि उस मॉस का सबसे अच्छा हिस्सा वह खुद खायेगा सो इसके लिये उसने एक चालाकी खेली।

वह स्कंक से बोला — "स्कंक भाई, हम लोगों को एक दौड़ दौड़नी चाहिये। उस दौड़ में जो भी जीत जायेगा वही गिलहरियों का सबसे ज़्यादा मजेदार मॉस खायेगा।"

स्कंक भी चालाक था, बोला — "नहीं भाई नहीं, यह शर्त तो ठीक नहीं है क्योंकि तुम तो दौड़ में बहुत तेज़ हो। मैं तो तुमसे दौड़

में कभी जीत ही नहीं सकता तो मुझे तो कोई मजेदार गिलहरी कभी मिलेगी ही नहीं।"

इस पर कायोटी बोला — "कोई बात नहीं, तुम खुश रहो। मैं अपने पैर में एक पत्थर बाँध लूँगा तब दौड़ूँगा।"

स्कंक बोला — "हाँ, यह ठीक है। अगर तुम अपने पैर में एक बड़ा पत्थर बाँध लो तो मैं इस दौड़ को दौड़ने के लिये तैयार हूँ।"

कायोटी बोला — "ठीक है, मैं यहाँ यह पत्थर अपने पैर से बाँध रहा हूँ तब तक तुम आगे चलो। मैं भागने वाली सीटी बजाऊँगा और फिर तुमको आ कर पकड़ लूँगा।"

स्कंक भाग लिया और तुरन्त ही कायोटी की नजरों से ओझल हो गया।

कायोटी ने अपने पैर में पत्थर बाँधा और धीरे धीरे भागना शुरू किया। कुछ दूर पहुँच कर उसने अपने पैर से पत्थर निकाल फेंका और बहुत तेज़ भागने लगा।

इधर स्कंक थोड़ी दूर भागने के बाद ही रुक गया और बीच में ही एक पत्तों के ढेर में छिप गया। उसने कायोटी को तेज़ी से भागते देखा तो वह वापस आग के पास लौट आया।

उसने जल्दी जल्दी सारी गिलहरियाँ आग में से निकालीं। उनमें से दो गिलहरियाँ बहुत पतली सी थीं सो वे उसने फिर से आग में डाल दीं।

बाकी गिलहरियों की पूँछ काट कर उसने उन पूँछों को भी आग में दबा दिया और मोटी मोटी गिलहरियाँ ले कर वह अपने पत्तों के ढेर के पास वापस आ गया।

उधर कायोटी तेज़ी से भागता चला जा रहा था। वह सोच रहा था कि स्कंक शायद उसके आगे ही होगा परन्तु उसको तो वह सारे रास्ते कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

वह कहाँ होगा, वह दिखायी क्यों नहीं दिया, वह इतनी तेज़ कैसे भागा, यही सब सोचते सोचते वह आग के पास आ गया।

उसने देखा कि बहुत सारी पूँछें आग के बाहर निकल रहीं थीं। उसने एक पूँछ पकड़ कर खींची तो वह बाहर निकल आयी।

इस तरह उसने कई पूँछें पकड़ कर बाहर खींचीं तो वे सारी की सारी बाहर निकल आयीं पर उनमें गिलहरी एक भी नहीं थी। वे सारी की सारी उनकी पूँछें ही पूँछें थीं।

सारी पूँछें मजेदार थीं परन्तु कायोटी को कुछ शक हुआ सो एक डंडी ले कर उसने आग में घुमायी तो उसमें उसको केवल दो पतली सी गिलहरी दिखाई दीं जिन्हें स्कंक छोड़ गया था।

"लगता है किसी ने हमारा खाना चुरा लिया है।" कहते हुए कायोटी ने वे दोनों पतली गिलहरियाँ खा लीं।

स्कंक ने भी अब तक अपना खाना खत्म कर लिया था। वह एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया। वहाँ से वह कायोटी को देख

रहा था। जब कायोटी वे दोनों गिलहरियॉ खा रहा था तो उसने ऊपर से कुछ बची हुई हड्डियॉ कायोटी की तरफ फेंकीं।

यह देख कर कायोटी चिल्लाया — "तुम सारा बढ़िया वाला मॉस खा गये थोड़ा सा उसमें से मुझे भी दो न।"

स्कंक चिल्लाया — "क्यों दूँ मैं तुमको बढ़िया वाला मॉस? उसके लिये तो तुमने दौड़ रखी थी न? मैं दौड़ में जीत गया तो वह मॉस मेरा हो गया इसलिये अब तुम्हारा उस मॉस में कोई हिस्सा नहीं रहा।"

कायोटी ने स्कंक से बहुत प्रार्थना की, बहुत प्रार्थना की कि वह उसको बढ़िया वाले मॉस में से कुछ टुकड़े दे दे परन्तु वह तो तब तक अपना आखिरी कौर खा कर रफू चक्कर हो चुका था।

इस तरह स्कंक ने होशियार कायोटी को बेवकूफ बनाया।

9 कायोटी ने अपने दोस्तों की नकल करना क्यों छोड़ा[22]

कायोटी और रैवन[23] दोनों बड़े अच्छे दोस्त थे। एक दिन कायोटी अपने लिये खाना ढूँढने निकला तो खाना ढूँढते ढूँढते थक गया पर उस दिन उसे खाना नहीं मिला।

उसने अपने दोस्त रैवन से मिलने के लिये नीले पहाड़ के ऊपर जाने का विचार किया। रैवन ने उसको आते देखा तो उसे घर में बुलाया और पूछा — "क्या बात है दोस्त, तुम इतने थके हुए और दुखी क्यों दिखायी दे रहे हो?"

कायोटी बोला — "क्या बताऊँ दोस्त, मैं खाना ढूँढने निकला था पर आज मुझे कहीं खाना नहीं मिला।"

यह सुन कर रैवन ने एक तीर अपनी कमान पर रखा और सीधा हवा में छोड़ दिया और उसके नीचे आने का इन्तजार करता रहा। कुछ देर में वह तीर नीचे आ गया और उसने रैवन का ऊपर वाला पंख भेद दिया।

---

[22] Why Coyote Stopped Imitating His Friends – a folktale of Native American Indians. North America. Adapted from the Web Site : http://www.indians.org/welker/whycoyot.htm

[23] Raven is crow like bird and is hero of many Native American folktales. See its picture above. Read its other stories in the books "Raven Ki Lok Kathayen-1" published by Indra Publishers in 2016 and "Raven Ki Lok Kathayen" published by Prabhat Prakashan in 2020.

जब रैवन ने वह तीर अपने पंख में से निकाला तो उसकी नोक में भैंस के मॉस का एक बहुत बड़ा टुकड़ा लगा हुआ था। रैवन ने वह मॉस का टुकड़ा कायोटी को दे दिया और कायोटी ने उसे खूब चटखारे ले ले कर खा लिया।

कायोटी बोला — "रैवन भाई, यह तो बहुत ही स्वादिष्ट मॉस था। मुझे तुम्हें इसका बदला कभी चुकाना ही चाहिये। तुम कभी जल्दी ही मेरे घर आओ न।"

रैवन ने वायदा किया कि वह उसके घर जरूर आयेगा।

अब कायोटी को तो पता नहीं था कि रैवन के पास भैंस के ऊपर जादुई ताकत थी इसलिये वह उसका मॉस उसे खिला सका सो उसने सोचा कि मॉस लेने के लिये वह यही चाल उसके साथ खेलेगा।

रैवन के आने की उम्मीद में उसने एक नयी कमान बनायी। जैसा कि रैवन ने वायदा किया था कुछ दिनों बाद रैवन अपने नीले पहाड़ से उतर कर कायोटी के घर उससे मिलने आया।

कायोटी रैवन को देख कर बोला — "आओ रैवन भाई आओ। मेरे पास अभी तो मॉस नहीं है क्योंकि इस समय मैं तुम्हारे आने की उम्मीद नहीं कर रहा था पर अगर तुम कुछ देर इन्तजार करोगे तो मैं तुम्हारे लिये मॉस का इन्तजाम कर सकता हूँ।"

कह कर कायोटी ने अपना नयी कमान उठायी और उससे उस ने रैवन की तरह ही एक तीर हवा में छोड़ दिया। फिर वह भी रैवन

की तरह ही उस तीर के नीचे आने के इन्तजार में खड़ा रहा। रैवन उसको देखता रहा पर बोला कुछ नहीं।

तीर नीचे आया और कायोटी की जॉघ में आ कर लगा। कायोटी दर्द के मारे चिल्ला कर अपने मेहमान को वहीं छोड़ कर भाग लिया।

रैवन वहॉ थोड़ी देर तक तो बैठा रहा फिर बिना कुछ खाये पिये ही वहॉ से चला गया। पर वह इस बात से कि कायोटी उसको कुछ खिला नहीं सका था नाराज नहीं था बल्कि वह तो इस बात को सोच सोच कर ही मन ही मन हॅस रहा था कि उसने उसे नकल करने की कोशिश की।

और इस बात को सोच सोच कर तो वह कई दिनों तक हॅसता ही रहा।

उधर कायोटी को मीलों तक भागते रहने बाद होश आया कि अब उसे रुकना चाहिये। वह रुका और उसने अपनी जॉघ में से तीर निकाला। उसको अपनी इस करनी पर इतनी शर्म आयी कि उसने वह तीर टुकड़े टुकड़े कर के फेंक दिया और यूॅ ही इधर उधर जंगलों में छिपता घूमता रहा।

कुछ समय बाद उसे फिर भूख लगी और जब उसे खाने को फिर से कुछ नहीं मिला तो उसने काले भालू से मिलने के लिये अमीर पहाड़[24] के ऊपर जाने का विचार किया।

[24] Rich Mountain

वह अमीर पहाड़ पर गया और काले भालू से मिला। काले भालू ने भी उसको प्रेम से घर में बुलाया और बोला — "मैं देखता हूँ कि अगर मैं तुम्हें कुछ खाना खिला सकता हूँ तो।"

बोलते बोलते भालू एक अलूचे के पेड़ के सहारे खड़ा हुआ जिस पर बहुत सारे पके हुए अलूचे लगे हुए थे और अपने शरीर को उससे रगड़ने लगा। उसके शरीर के उस पेड़ से रगड़ने से वह पेड़ हिला और बहुत सारे पके अलूचे नीचे गिर पड़े।

भालू ने मुस्कुरा कर कायोटी की तरफ देखा और उसने वे अलूचे कायोटी को खाने के लिये दिये। कायोटी भी उनको तब तक खाता चला गया जब तक वह उनको खाते खाते थक नहीं गया।

फिर कुछ अलूचे उसने अपनी जेबों में भी रख लिये और बोला — "धन्यवाद मेरे दोस्त। मैं अब चलता हूँ पर वायदा करो कि अब तुम भी मेरे घर जल्दी ही आओगे।"

भालू ने कहा — "हाँ दोस्त कायोटी, मैं जरूर आऊँगा।"

अगले दिन कायोटी वैसे अलूचे के पेड़ को ही ढूँढता रहा पर उसे कहीं ऐसा अलूचे का पेड़ नहीं मिला जिस पर फल लदे हों। सो उसने फिर एक ऐसा ही पेड़ काट लिया जिस पर फल नहीं थे।

वह उस पेड़ को घर ले आया और उसको जमीन में गाड़ कर ऐसे खड़ा कर दिया जैसे वह वहीं उगा हुआ हो। फिर उसने अपने

साथ लाये हुए अलूचे निकाले और उन्हें उस पेड़ की शाखों से ऐसे बॉध दिये जैसे वे उसी पेड़ के फल हों।

वह काला भालू अपने वायदे के अनुसार कायोटी के घर आया। कायोटी बोला — "भालू भाई, तुम्हें आज अपने घर में देख कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। तुम बैठो मैं तब तक तुम्हारे लिये कुछ खाने के लिये ले कर आता हूँ।"

कायोटी बाहर गया और उस भालू की तरह से अपना शरीर उस अलूचे के पेड़ से रगड़ने लगा। उसने खूब अच्छी तरह से अपने शरीर को उस अलूचे के पेड़ से रगड़ा ताकि वे अलूचे उसके शरीर की रगड़ से गिर जायें पर वे इतनी मजबूती से बॅधे हुए थे कि उनमें से एक भी अलूचा नहीं गिरा।

हालॉकि यह उसके लिये बड़ी शरम की बात थी इसलिये उसने अलूचे गिराने के लिये उस पेड़ को अपने पंजों से इतनी ज़ोर से हिलाया कि वह पेड़ पूरा का पूरा ही उसके सिर के ऊपर गिर पड़ा।

उसने बहाना किया कि उसे कुछ नहीं हुआ है और वह भालू के लिये फल इकट्ठे करने के लिये जंगल में चला गया। पर उसको दर्द इतना ज़्यादा था कि उसको ज़्यादा कुछ दिखायी नहीं दे रहा था।

इसके अलावा पेड़ के गिरने से बनी उसके सिर में बनी गॉठ भी बड़ी होती जा रही थी। फिर भी वह भालू के लिये कुछ ले कर ही लौटा।

भालू ने कुछ खाया तो सही पर उसके लिये उस खाने को निगलना बड़ा मुश्किल लग रहा था क्योंकि कायोटी ने जिस तरह से उसकी नकल की थी उसको उस पर बहुत ज़ोर की हॅसी आ रही थी।

कुछ देर बाद भालू कायोटी से बोला कि अब उसको चलना चाहिये क्योंकि उसको डर था कि कायोटी कहीं उसकी हॅसी न देख ले।

जब भालू चला गया तो कायोटी ने अपना दुखता हुआ सिर पकड़ लिया पर वह खुश था कि वह अपने दोस्त काले भालू को कुछ खिला सका।

कुछ दिनों बाद कायोटी एक बार फिर खाना ढूँढने के लिये जंगल में गया। चलते चलते वह एक घास से बने हुए एक घर के पास आया। ऐसा घर उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उसको आश्चर्य हुआ कि ऐसे घर में कौन रह सकता है। और हो सकता है कि उसके पास कुछ खाना भी उसको देने के लिये हो। सो वह उस घर के दरवाजे पर पहुँचा और आवाज लगायी — "अन्दर कोई है? मैं कायोटी हूँ।"

"मैं कठफोड़वा[25] हूँ। आ जाओ, अन्दर आ जाओ।" कठफोड़वा बोला।

[25] Translated for the word "Woodpecker bird" that always pecks the wood. See its picture above.

कायोटी उस घर में अन्दर घुसा तो वहॉ उसने एक चिड़िया देखी जिसके सिर पर तो रोशनी हो रही थी।

कायोटी बोला — "यह क्या दोस्त, तुम्हारे सिर पर तो आग लगी हुई है। अगर तुमने इसे जल्दी ही नहीं बुझाया तो तुम्हारा तो यह सारा घर ही जल जायेगा।"

लाल सिर वाला कठफोड़वा मुस्कुराया और शान्त आवाज में बोला — "मैं तो हमेशा ही इस आग को अपने सिर पर पहने रहता हूॅ। यह मुझे जन्म से ही मिली हुई है। यह मेरा कुछ नहीं जलायेगी।" फिर कठफोड़वा ने कायोटी को कुछ खिलाया।

जब कायोटी ने पेट भर कर खा लिया तो वह कठफोड़वा से बोला कि अब उसको जाना चाहिये और उसको भी कभी उसके घर आना चाहिये ताकि वह भी उसकी मेहमानदारी लौटा सके। कठफोड़वा बोला कि वह उसके घर जरूर आयेगा।

कुछ दिन बाद कठफोड़वा कायोटी के घर गया। उसने दरवाजे से ही पूछा — "घर में कोई है?"

कायोटी बोला — "एक मिनट।"

कठफोड़वा घर में कुछ आवाजें सुनता रहा फिर कायोटी की आवाज आयी — "आओ कठफोड़वा भाई, अब अन्दर आ जाओ और आराम से बैठो।"

कठफोड़वा घर में घुसा तो उसने क्या देखा कि कायोटी के सिर पर तो कुछ तिनके जल रहे हैं।

कठफोड़वा तुरन्त चिल्लाया — "हटाओ हटाओ, इन जलते हुए तिनकों को जल्दी से हटाओ कायोटी भाई। तुम्हारा सिर जल जायेगा।"

कायोटी मुस्कुराया और शान्त आवाज में बोला — "नहीं नहीं, ये जलते हुए तिनके मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। ये मेरा सिर नहीं जलायेंगे मैं तो इनको हमेशा ही अपने सिर पर पहने रहता हूँ।

मैं जब पैदा हुआ था तो मुझे बताया गया था कि मैं रात को यह रोशनी पहन सकता हूँ ताकि फिर मैं जो चाहे कर सकूँ जबकि दूसरे लोग अँधेरे में ही रहेंगे।"

कायोटी ने अपनी बात खत्म भी नहीं की थी कि उसके सिर के बालों ने आग पकड़ ली। वह दर्द के मारे चिल्लाया। उसने वह आग बुझानी चाही पर वह बुझा नहीं सका। वह चिल्लाता हुआ अपने घर से बाहर नदी की तरफ भागा।

कठफोड़वा उसके लौटने का बहुत देर तक इन्तज़ार करता रहा पर कायोटी तो अपने सिर की जलन को ठंडा करने के लिये सारा दिन नदी से बाहर ही नहीं निकल सका।

बस इसके बाद कायोटी ने अपने किसी दोस्त की नकल करने की जुर्रत ही नहीं की।

10 भूखा कायोटी[26]

अपनी इस हरकत के बाद कि उसने डाक्टरों को मरे हुओं की आत्माओं को भगा कर उनको ज़िन्दा नहीं करने दिया लोग उससे इतना नाराज थे कि वे उसको खाना नही देते थे। सो अब वह हमेशा ही केवल भूखा ही नहीं बल्कि बहुत भूखा रहता था।[27]

और क्योंकि वह हमेशा से ही डरपोक था सो वह हमेशा ही खेतों और जंगलों में खाना ढूढने के लिये झॉकता फिरता था।

एक दिन जब वह एक झाड़ी के पास से गुजर रहा था तो पास में लगे हुए एक परसीमौन के पेड़[28] में से आती हुई उसने कुछ आवाज सुनी।

उसने ऊपर की तरफ देखा तो उसने देखा कि एक ओपोसुम[29] उस पेड़ पर बैठा बैठा परसीमौन खा रहा था। कायोटी ने उससे प्रार्थना की कि उनमें से कुछ फल वह उसके लिये भी

---

[26] Coyote the Hungry – a Caddo legend from Native Americans, North America.
Adapted from the Web Site :
http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/CoyoteTheHungry-Caddo.html
This Web Site claims that it records more than 1,400 mythological tales and folktales from various Native American tribes from North America.

[27] Read this story “Kaayotee Aur Maut Ka Janm” in this book.

[28] Persimmon tree is grown mostly for ebony timber. It bears edible fruit also eaten fresh, dried, raw, or cooked.

[29] Opossum is a kind of mammal, ranging from a small mouse to a large size of cat, See its picture above.

नीचे फेंक दे पर ओपोसुम केवल हॅसता ही नहीं रहा बल्कि और जल्दी जल्दी और ज़्यादा परसीमौन खाने लगा।

वह परसीमौन खाता रहा और उसके बीज नीचे कायोटी के ऊपर फेंकता रहा। यह सब देख कर कायोटी को ओपोसुम पर गुस्सा आता रहा पर ओपोसुम उसको इस तरीके से गुस्सा देख कर और ज़्यादा हॅसता रहा।

एक बार ओपोसुम एक शाख पर थोड़ा सा चला और नीचे की तरफ झुका जैसे कि वह कायोटी के मुॅह में गिरने जा रहा हो कि तभी कायोटी ने उसके अपने दॉतों से काटने के लिये अपना मुॅह खोला। ओपोसुम ने बजाय नीचे गिरने के अपनी पूॅछ शाख के चारों तरफ लपेट ली और ऊपर की तरफ चला गया।

ऐसा उसने कायोटी के साथ बार बार किया। अब क्या था कायोटी का गुस्सा तो और ऊपर चढ़ने लगा।

इसके बाद ओपोसुम एक सूखी हुई शाख पर चढ गया और वहॉ से चिल्लाया — "देख मैं यहॉ हूॅ। इस बार तू मुझे आ कर पकड़ सके तो पकड़ ले।"

शाख सूखी हुई थी खटाक से टूट गयी और ओपोसुम नीचे आ गिरा। ओपोसुम ने कायोटी को ऐसा दिखाया कि जैसे उसको पेड़ से गिर कर बहुत चोट लगी है।

बस फिर क्या था कायोटी ने उसको बहुत मार लगायी और उसको वहीं मरने के लिये छोड़ कर चला गया।

पर ओपोसुम भी कोई बेवकूफ नहीं था। उसको बिल्कुल भी चोट नहीं लगी थी बस वह तो केवल कायोटी को ऐसा दिखा रहा था जैसे उसको बहुत चोट लगी हो।

जैसे ही कायोटी वहॉ से कुछ दूर चला गया वह वहॉ से कूद कर उठ गया और फिर से परसीमौन के पेड़ पर चढ़ गया।

कुछ दूर जाने के बाद कायोटी ने पीछे मुड़ कर देखा कि ओपोसुम अभी ज़िन्दा है कि मर गया पर उसने देखा कि ओपोसुम तो अपने जगह पर था ही नहीं वह तो परसीमौन के पेड़ पर बैठा परसीमौन खा रहा था। वह अभी भी हॅस हॅस कर उसके फल खा रहा था और उनके बीज नीचे फेंक रहा था।

क्योंकि कायोटी बहुत भूखा था सो वह खाने की तलाश में कुछ दूर और आगे चल दिया। धीरे धीरे उसको कुछ लोगों के आनन्द मनाने की आवाजें सुनायी पड़ने लगीं।

और आगे जाने पर उसने देखा कि पहाड़ी के पास कुछ टर्कियॉ खेल रही हैं। वे एक थैले में चढ़ जातीं और फिर एक दूसरे को पहाड़ी से नीचे लुढ़का देतीं।

कायोटी ने सोचा "अब अच्छा खाना खाने की बारी मेरी है।"

सो उसने टर्कियों से कहा कि वे उसको भी थैले में बन्द कर के पहाड़ी के नीचे लुढ़का दें। सब टर्कियॉ बहुत ही अच्छे स्वभाव की थीं सो उन्होंने कायोटी को भी एक थैले में बन्द किया और पहाड़ी से नीचे दो तीन बार लुढ़का दिया।

उसके बाद कायोटी ने उनसे कहा कि वे एक थैले में एक साथ भर जायें तो वह उनको पहाड़ी के नीचे लुढ़का देगा।

यह सुन कर वे सब एक साथ एक थैले में भर गयीं और जैसे ही वे थैले के अन्दर गयीं कायोटी ने एक पल में ही उस थैले का मुँह कस कर बन्द कर दिया ताकि वे उसमें से बाहर न निकल सकें।

उसने वह थैला अपनी पीठ पर लादा और अपने घर चला गया। उसके चार कायोटी बेटों ने जब अपने पिता को आते देखा तो वे उससे मिलने के लिये भागे।

वह बोला — "तुम यह थैला देख रहे हो न। यह पूरा थैला टर्कियों से भरा हुआ है। ये सब बच्चे हैं और कोमल हैं। चलो जल्दी से आग जलाओ हम सब आज बहुत अच्छा खाना खायेंगे।

सबने मिल कर आग जलायी पर उन्होंने देखा कि उनके पास आग जलाने के लिये लकड़ी काफी नहीं थी सो कायोटी को लकड़ी लाने के लिये जंगल जाना पड़ा।

पर जाने से पहले उसने अपने बच्चों को सावधान किया — "ध्यान रखना मेरे पीछे यह थैला किसी हालत में नहीं खोलना।" कह कर कायोटी वहाँ से चला गया।

उसका सबसे छोटा बेटा बहुत ही उत्सुक था सो जैसे ही उसका पिता गया तो उसने देखना चाहा कि उस थैले में टर्कियाँ वहाँ क्या कर रही थीं। बस उसने थैले की रस्सी की गाँठ खोल दी। जैसे ही

रस्सी की गॉठ ढीली हुई सारी की सारी टर्कियॉ थैले में से निकल कर भाग गयीं।

कायोटी जब जंगल से लकड़ी ले कर वापस आया तो उसने देखा कि उसकी तो सारी टर्कियॉ गायब हैं। हालॉकि उसने अपने उस बेटे की खूब पिटायी की पर उस रात उनको टर्कियॉ खाने को नहीं मिलीं।

एक दिन कायोटी फिर खाना ढूँढने के लिये जंगल गया तो वहॉ उसने एक पेड़ पर एक जंगली नर टर्की बैठा हुआ दिखायी दे गया। यह नर टर्की बहुत मोटा था। उसको देख कर कायोटी के मुँह में पानी आ गया। उसने सोचा "आज तो मुझे इस टर्की को खाना ही है।"

और क्योंकि कायोटी तो एक बहुत बड़ा झूठा है और डरपोक है सो वह नर टर्की से बोला— "अगर तुम पेड़ से नीचे नहीं आये तो मैं तुम्हें पेड़ पर चढ़ कर मार डालूँगा। पर अगर तुम मैदान में उतर आये तो मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।"

नर टर्की ने उसका विश्वास कर लिया और वह मैदान की तरफ उड़ गया। उसको मैदान की तरफ उड़ते देख कर कायोटी उसके पीछे दौड़ा। नर टर्की पहले तो बहुत ऊँचा उड़ा पर बाद में वह थक गया।

अब उसको उतरने के लिये कोई पेड़ ही दिखायी नहीं दे रहा था तो वह कुछ नीचे की तरफ उड़ने लगा। यहाँ तक कि वह जमीन पर उतर आया।

जैसे ही वह जमीन पर उतरा कि कायोटी उसके ऊपर कूद पड़ा और उसे खा गया। बाद में वह उसकी बची हुई हड्डियाँ चाटने लगा।

जब वह नर टर्की की बची हुई हड्डियाँ खा रहा था तो उसको लगा कि कोई आदमी उसको देख रहा है। उस आदमी के हाथ में एक बड़ी डंडी भी है और वह उस डंडी से उसको मारने के लिये तैयार है। सो डर कर उसने पीछे मुड़ कर देखा कि कोई उसको देख तो नहीं रहा।

कायोटी तो बहुत बुरी तरह से डर गया और वहाँ से जितनी जल्दी भाग सकता था भाग लिया। बार बार वह पीछे मुड़ मुड़ कर देखता जाता था कि कहीं वह डंडी वाला आदमी उसके पीछे तो नहीं आ रहा।

पर हर बार जब भी उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसको हमेशा यही लगा कि वह आदमी उसके पीछे ही खड़ा है और उसको मारने के लिये तैयार है। सो वह और तेज़ भागने लगा।

भागते भागते उसको लगा कि बस अब तो वह मर ही जायेगा। तेज़ भागते भागते उसकी ताकत ने भी जवाब दे दिया था।

अब उसने सोचा कि वह इस आदमी को बेवकूफ बनाता है सो वह कभी दॉयी तरफ भागता तो कभी बॉयी तरफ। पर इस तरह भी भागते भागते वह इतना थक गया कि वह फिर और आगे नहीं भाग सका।

वह वहीं घास पर लुढ़क गया और अपनी पीठ पर लेट कर उसने उस आदमी से यह प्रार्थना की कि वह उसको न मारे। फिर वह अपने पेट के बल लेट गया और जैसे ही उसने ऐसा किया कि उसने अपने सिर में कड़ कड़ की अवाज सुनी।

पहले तो उसको लगा कि वह उसका कोई दॉत है जो ऐसी आवाज कर रहा है पर नहीं यह तो उसका दॉत नहीं था वह तो टर्की का एक लम्बा सा पंख था जो उसके ऊपर वाले दो दॉतों के बीच में फॅस गया था और जो उसकी बॉयी ऑख के आगे आ रहा था।

जब कायोटी को इस बात का पता चला कि वह किससे डर कर भाग रहा था और किससे प्रार्थना कर रहा था कि "मुझे मत मारो।" तो वह तो हॅसते हॅसते लोटपोट हो ही गया।

वह उस आदमी को क्या बेवकूफ बनाता जो उसके पीछे डंडी ले कर पड़ा था वह तो खुद ही बेवकूफ बन गया था। उसके पीछे तो कोई आदमी था ही नहीं। वह तो केवल टर्की के एक पंख से ही डर कर भाग रहा था।

उसी दिन से कायोटी हमेशा डरता रहता है उसकी ऑखें बड़ी बड़ी खुली रहतीं हैं और जब भी वह भागता है तो हमेशा पीछे देखता जाता है कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा।

11 ईकटोमी और कायोटी–1[30]

मैदान में ऊपर सूरज बहुत ज़ोर से चमक रहा था। नीचे हरी घास पर बेकार की लम्बी लम्बी बेलें फैलीं पड़ीं थीं। ईकटोमी[31] अपनी हिरन की खाल में चमकीले नंगे सिर धूप में उस घास के मैदान में अकेला घूम रहा था।

वह घास में बिना किसी साफ सुथरी पगडंडी के ही चला जा रहा था। चारों तरफ वह बेकार वाली घास में धीरे धीरे पॉव रखता चला जा रहा था कि वह बेकार वाली घास के एक बड़े से गुच्छे के आने से पहले ही रुक गया।

उसने अपने सिर को इस कन्धे से उस कन्धे तक घुमाया। थोड़ा और आगे बढ़ कर वह पहले एक तरफ घूमा, फिर दूसरी तरफ घूमा, और फिर यह देखने के लिये थोड़ा और आगे जा कर रुक गया कि आखिर उस घास के पीछे छिपे फ़र के कोट के नीचे क्या था।

वह था एक पतला सा छोटा सा भेड़िया। उसकी नुकीली काली नाक उसके चारों पैरों के बीच में घुसी हुई थी। उसकी सुन्दर घनी

---

[30] Iktomi and Coyote - a folktale of Native American Indians. Adapted from the Book : "Old Indian Legends / by Zitkala-Sa. Boston, Ginn and Company. 1901. Its 14 stories are on http://www.worldoftales.com/Native_American_folktales/Native_American_Folktale_40.html

[31] Iktomi is a spider fairy, pronounced as "Ee-k-tomee". See its picture above.

पूँछ उसकी नाक और पैरों के चारों ओर लिपटी हुई थी। एक कायोटी[32] उस घनी घास में छाँह में गहरी नींद सो रहा था। ऐसा ईकटोमी ने देखा।

बिना आवाज किये उसने पहले एक कदम उठाया, फिर दूसरा और फिर धीरे धीरे चलता हुआ उस फ़र की गेंद के पास आ गया जो वहाँ सो रही थी। अब ईकटोमी कायोटी के बिल्कुल पीछे खड़ा था और उसकी बन्द पलकों की तरफ देख रहा था जो ज़रा सी भी नहीं हिल रहीं थीं।

ईकटोमी ने पहले अपने होठ दबाये, फिर धीरे से सिर हिलाया और उसके बाद उस भेड़िये की तरफ देखा। फिर वह अपना कान उसकी नाक के पास ले गया तो उसको तो कायोटी की साँस भी महसूस नहीं हुई।

आखिर वह बोला — "यह तो लगता है कि मर गया। मर तो गया पर लगता है कि इसे मरे बहुत देर नहीं हुई है क्योंकि इसके पंजे में तो अभी भी ताजा पंख लगा हुआ है। यह तो अच्छा मोटा माँस है।"

कहते हुए और उसका वह पंजा पकड़ते हुए जिसमें उसने पंख पकड़ रखा था वह बोला — "अरे इसका तो पंजा भी अभी गर्म है। मैं इसको अपने घर ले जाता हूँ और शाम को इसको भून कर खाऊँगा। हा हा हा।" कह कर वह हँस दिया।

[32] Coyote is a small desert wolf and a hero of many Native Americns' folktales. See its picture above.

उसने कायोटी को उसके आगे वाले दोनों पंजों से पकड़ लिया और उसके दोनों पिछले पंजों को अपने कन्धे पर डाल लिया। वह भेड़िया बहुत बड़ा था और इकटोमी का घर वहॉ से काफी दूर था।

इकटोमी धीरे धीरे अपना बोझ ले कर और कायोटी के मॉस के स्वाद का आनन्द लेता हुआ चला। वह अपनी ऑखें मिचकाता जा रहा था ताकि उसकी ऑखों का नमकीन पानी उसके चेहरे पर न आये।

इस पूरे समय में कायोटी अपनी ऑखें खोले खुले आसमान की तरफ देखता रहा और अपने चमकीले दॉत निकाल कर हॅसता रहा।

वह अपने मन में कह रहा था — "अपने पैरों पर चलना तो थका देने वाला होता है पर अगर कोई किसी के कन्धे पर चढ़ कर जाता है जैसे कि लड़ाई का कोई लड़ने वाला जीत कर जाता है तो वह तो कितना अच्छा है।"

वह आज से पहले इस तरह से किसी के कन्धे पर चढ़ कर नहीं गया था इसलिये यह नया अनुभव तो उसको बहुत ही अच्छा लग रहा था।

वह ईकटोमी के कन्धे पर सुस्ती से पड़ा रहा। बस कभी कभी अपनी पलकें झपका लेता था। कायोटी को नींद भी आ रही थी और उसको अपने ऊपर थोड़ा घमंड भी हो रहा था कि वह ईकटोमी के कन्धे पर चढ़ कर जा रहा था।

ईकटोमी अब करीब करीब अपने घर आ पहुँचा था और कायोटी भी अब पूरी तरह से जाग चुका था क्योंकि थोड़ी ही देर में वह इकटोमी के हाथ से फिसल जाने वाला था।

सो उसने फिसलना शुरू किया और वह नीचे इतनी ज़ोर से गिरा कि कुछ देर तक तो उसे साँस ही नहीं आयी।

वह यह सोचते सोचते कि अब ईकटोमी उसका क्या करेगा चुपचाप वहीं पड़ा रहा जहाँ गिरा था। कभी कभी वह किसी गाने की धुन गुनगुना लेता था। उधर ईकटोमी एक बहुत बड़ी दावत और नाच के बारे में सोच रहा था।

उसने जा कर सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और उनको अपने घुटने की सहायता से दो दो टुकड़ों में तोड़ दिया। फिर उसने अपने घर के बाहर एक बहुत बड़ी आग जलायी।

जब उसमें से लाल पीली लपटें उठने लगीं तो वह कायोटी के पास लौटा। कायोटी अपनी पलकों के बालों के बीच में से सब देख रहा था।

ईकटोमी कायोटी को उसके आगे और पीछे वाले पंजों से पकड़ कर झुलाता हुआ आग के पास लाया और उसको आग में फेंक दिया। पर कायोटी फिर बीच में ही गिर गया।

उसके नथुनों में गर्म हवा घुसी जा रही थी। उसकी आँखों के सामने आग की लपटें नाच रहीं थी। वह कुछ अंगारों से छू गया तो तुरन्त ही वहाँ से कूद गया। जैसे ही वह कूदा तो कुछ अंगारे उसके

पैरों से छू कर ईकटोमी की नंगी बॉहों और कन्धों पर आ कर गिर गये।

ईकटोमी तो कुछ बोल ही नहीं सका। उसको लगा कि कोई आत्मा आग में से निकल कर आ रही थी। उसका तो मुँह खुला का खुला ही रह गया। उसने पाम का एक पत्ता उठा कर कायोटी के चेहरे पर ज़ोर से मारा। वह उसको चिल्लाने से रोकना चाहता था।

कायोटी ने घास में लुढ़क कर और सिर को जमीन पर मल कर अपने बालों में लगी आग बुझायी। ईकटोमी तो यह सब देखता का देखता ही रह गया और अपने जलते हुए कन्धे और बॉहों को फूँक मार मार कर ठंडा करता रहा।

उधर कायोटी आग के दूसरी तरफ ईकटोमी के सामने बैठ कर हॅसता रहा फिर बोला — "कोई बात नहीं ईकटोमी, अगली बार सही। तुमको आग जलाने से पहले ही यह निश्चय कर लेना चाहिये था कि तुम्हारा दुश्मन मर गया है या नहीं।"

इतना कह कर वह बहुत तेज़ी से वहॉ से भाग गया।

12 ईकटोमी और कायोटी–2[33]

एक बार ईकटोमी[34] कहीं जा रहा था। चलते चलते वह बोलता जा रहा था — "हलो हलो, मैं ईकटोमी हूँ। तुम सब मुझे जानते हो। मैं कल व्हाइट हाउस[35] में था क्योंकि अमेरिका के प्रेसीडैन्ट को मेरी सलाह चाहिये थी।

यह कल की बात है पर आज मैं स्कूल में बच्चों के लिये पढ़ने के लिये जा रहा हूँ। मैं उनके लिये वे किताबें पढ़ूँगा जिनमें मेरे बहादुरी के कारनामे और मेरी दया की कहानियाँ लिखी हुई हैं। हर एक ने उनको पढ़ रखा है क्योंकि मैं बहुत मशहूर हूँ।

मैंने अपनी रीति रिवाजों के अनुसार कपड़े पहन रखे हैं। आज मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा है। मैं अच्छा दिखायी भी दे रहा हूँ।

बच्चे मुझे देख कर मुझसे बहुत प्रभावित होंगे। मुझे मालूम है कि मैं देखने में अच्छा लगता हूँ क्योंकि मैं उसी तरह का लग रहा हूँ जैसा कि मैं इन किताबों में लगता हूँ।"

---

[33] Iktomi and the Coyote – a story of Native American Indians, North America.
Adapted from the book : "Iktomi and the Coyote: a plains Indian story". by Paul Goble. NY, Orchard Books. 26 p.
[This story is similar to the story "Skunk Ne Coyote Ko Pachhaadaa" story given in this book.]

[34] Iktomi is a spider fairy but can take any form. Pronounced as Ee-k-tomee.

[35] White House is the residence of US President.

"मुझे देख कर बच्चों को लगेगा कि बहुत बहुत बहुत पहले हमारे पुरखे कैसे कपड़े पहना करते थे। हालॉकि उनको यह भी कहना पड़ेगा कि मैं अपने पुरखों से ज़्यादा अच्छा लग रहा हूँ।"

"मैं बच्चों को बताऊँगा कि भैंसों के दिनों में हम लोग कैसे रहते थे। अब तो केवल मैं ही एक बड़ा बचा हूँ न।"

तभी ईकटोमी को किसी की हँसी की आवाज और ऊँचे सुर में गाने की आवाज सुनायी पड़ी। वह बोला — "अरे, यह क्या है?"

उसने इधर देखा उधर देखा पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया। फिर उसको वह आवाज और गाने की आवाज दोबारा सुनायी दी तो उसने अपने मन में सोचा — "अरे, देखो तो, वे तो घास के मैदानों के कुत्ते[36] हैं।

ओह, ये घास के मैदानों के कुत्ते खाने के लिये तो मुझे अब भूख भी लग आयी है। घास के मैदान के भुने कुत्ते से बढ़ कर स्वादिष्ट खाना तो कहीं है ही नहीं। पर अब मैं उनको पकडूँ कैसे?"

सो वह धीरे धीरे उनकी तरफ बढ़ा। वे कुत्ते एक खेल खेल रहे थे। एक एक कर के वे आग की गर्म राख में गरदन तक धँस जाते थे।

[36] Although Iktomi was calling them prairie dogs, but in reality they were not the prairies dogs, they were the ground squirrels.

वे कोई खास गाना गा रहे थे जिससे वे उस गर्म राख में भी जलते नहीं थे। पर जब वे और ज़्यादा नहीं सह पाते थे तो वे अपने साथियों को पुकारते थे और वे उनको उस गर्म राख में से खींच लेते थे।

वे सब खूब हॅस रहे थे और अपने खेल का खूब आनन्द ले रहे थे। ईकटोमी बोला — "ओ मेरे छोटे भाइयों, तुम क्या ही अच्छा खेल खेल रहे हो – राख में दब जाना और फिर उससे जलना भी नहीं। मैं भी यह खेल खेलना चाहता हूँ। मुझे भी राख में गाड़ दो।"

वे सब चिल्लाये — "ओह नहीं ईकटो। तुम जल जाओगे। पहले तुमको हमारा गीत सीखना पड़ेगा ताकि तुम जल न सको। अब तुम हमको ध्यान से सुनो और फिर हमारा गीत सीखो तब हम तुमको राख में गाड़ देंगे।"

ईकटोमी बोला — "यह तो ठीक है पर मेरे पास इससे एक और ज़्यादा अच्छा विचार है। क्यों न मैं तुम सबको राख से ढक दूँ – सबको एक साथ।

इस तरह से तुम्हारे गीत की आवाज इतनी तेज़ हो जायेगी कि मैं उसे अच्छी तरह से सुन सकूँगा। जब तुम उसमें से निकलना चाहो तो बस चिल्ला देना "बाहर", और मैं तुमको बाहर निकाल लूँगा।"

वे सब एक साथ बोले — "ईकटो तुम कितना अच्छा सोचते हो।"

सो वे सब घास के मैदान के कुत्ते जल्दी से उसी तरह से एक साथ लेट गये, एक के बाद एक, जैसे मटर की फली में मटर के दाने लगे रहते हैं।

ईकटोमी को उनको गर्म राख से ढकने के लिये काफी काम करना पड़ा। जब तक वह उन कुत्तों को गर्म राख से ढकता रहा वे कुत्ते अपनी सबसे तेज़ आवाज में अपना गीत गाते रहे।

ईकटोमी उनको राख से ढकता जा रहा था और मन ही मन हॅसता हुआ कहता जा रहा था — "बस "बाहर" चिल्ला देना।"

थोड़ी देर बाद कुत्तों ने बाहर निकालने के लिये चिल्लाना शुरू किया पर ईकटोमी ने उनके चिल्लाने पर कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि वह तो उन पर और जल्दी जल्दी गर्म राख डालने लगा।

घास के मैदान वाले कुत्तों ने उससे उनको बाहर निकालने के लिये बहुत प्रार्थना की। एक ने तो उससे दया की भीख भी मॉगी क्योंकि वह जल्दी ही अपने बच्चों को जन्म देने वाली थी।

ईकटोमी बोला — "ठीक है।" और उसने आ कर उसको बाहर निकाल दिया। फिर वह उससे बोला — "जाओ और आराम से रहो तो और ज़्यादा घास के मैदान वाले कुत्ते पैदा होंगे।"

फिर ईकटोमी ने अपना दिल थोड़ा कड़ा कर लिया। उसने उन कुत्तों की चिल्लाहटों के लिये अपने कान बन्द कर लिये। और वे

घास के मैदान के कुत्ते तब तक उस राख में भुनते रहे जब तक वे मर नहीं गये। उफ़, क्या यह भयानक नहीं है?[37]

जब ईकटोमी को लगा कि वे अब अच्छी तरह से भुन गये हैं तो उसने उनको राख में से निकाल लिया और एक विलो के पेड़[38] की डंडियों पर ठंडा होने के लिये रख दिया और खुद एक पत्थर पर बैठ गया।

उन भुने हुए कुत्तों को देख कर उसके मुँह में पानी आ रहा था। जैसे ही वह अपना पहला कौर काटने जा रहा था कि उसने देखा कि कायोटी[39] तो उसी की तरफ चला आ रहा था।

वह सोच रहा था कि "मैं कितनी भी कोशिश क्यों न करूँ पर मैं कायोटी को पसन्द नहीं कर सकता।"

कायोटी तो सचमुच में ही बहुत दुखी, बीमार और भूखा दिखायी दे रहा था। उसके शरीर पर कई पट्टियाँ बँधी हुई थीं और वह बड़े दर्द के साथ लँगड़ाता हुआ तीन टाँगों पर चल रहा था।

---

[37] Since then prairie dogs' tails have had burned-black tips and they have never again trusted two-legged, or let them get close to them.

[38] Willow tree – if you burn green willow sticks you will notice that they are still soaked with grease.

[39] Coyote, pronounced as Kaayotee, is a small deser wolf. He is the hero of many Native American Indian's folktales.

कायोटी बोला — "ओह ईकटो, मेरे बड़े भाई, मुझे बहुत ही कमजोरी महसूस हो रही है। मेहरबानी कर के मुझे खाने के लिये थोड़ा सा मॉस दे दो। मैंने बहुत समय से कुछ खाया नहीं है।"

ईकटोमी बड़े कड़े दिल से जवाब दिया — "कभी नहीं। एक कौर भी नहीं। यह खाना मेरा है और यह सारा का सारा खाना मेरा है। चले जाओ यहॉ से।" पर फिर ईकटोमी का इरादा बदल गया।

वह बोला — "ठीक है, मैं बहुत ही न्याय प्रिय आदमी हूॅ। मैं तुमको एक मौका देता हूॅ। हम लोग एक जुआ खेलते हैं। हम दोनों उस पहाड़ी के चारों तरफ दौड़ते हैं जो कोई भी जीत जायेगा वह इस सारे मॉस को ले लेगा।"

कायोटी बोला — "ठीक है मेरे छोटे भाई।"

ईकटोमी फिर बोला — "तुम्हारी तबियत तो मुझे कुछ ठीक नहीं लगती सो न्याय से भरी दौड़ दौड़ने के लिये मैं यह पत्थर जिस पर मैं बैठा हुआ हूॅ उठा कर दौडूॅगा और तुम ऐसे ही दौड़ना।"

सो उसने वह पत्थर अपने एक कम्बल में लपेट लिया और अपने कन्धे पर लटका लिया। फिर वह एकाएक बोला — "एक, दो, तीन.... ।"

और फिर जितना तेज़ वह दौड़ सकता था दौड़ लिया। वह पत्थर उसकी कमर पर हिलता जा रहा था – ऊपर नीचे, ऊपर

नीचे। हर कदम पर वह हिलता हुआ पत्थर उसकी कमर पर लग रहा था।

कायोटी उसके पीछे पीछे चिल्लाया — "रुक जाओ ईकटो, ज़रा रुको।" पर ईकटोमी ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

"ईकटो, मेरे दोस्त। मुझे छोड़ कर मत जाओ।"

जब ईकटोमी ने पहाड़ी के दूसरी तरफ का चक्कर लगाना शुरू किया तो कायोटी उससे बहुत पीछे था। वह बेचारा बड़ी दीन आवाज में चिल्लाया — "ज़रा मेरा इन्तजार तो करो ईकटो।"

जब ईकटोमी पहाड़ी के पीछे ऑखों से ओझल हो गया तो कायोटी ने अपनी सारी पट्टियॉ खोल दीं और उन घास के मैदान वाले कुत्तों को खाने के लिये दौड़ गया। क्योंकि बीमार होने का तो वह केवल बहाना कर रहा था। वह तो बिल्कुल ठीक था।

कायोटी वे भुने हुए कुत्ते खाता जा रहा था और चिल्ला चिल्ला कर अपने रिश्तेदारों को सुना सुना कर कहता जा रहा था — "खाना खाना खाना। आओ और खाना खालो। देखो यहॉ कितना सारा खाना है।"

उसके बहुत सारे रिश्तेदारों ने उसकी आवाज सुनी और भागे चले आये। उसके दूसरे रिश्तेदार जैसे कौआ, गरुड़, मैना आदि भी वहॉ दावत खाने आ गये। जो टुकड़े उन लोगों के खाने से गिर गये थे वे चूहे ने साफ कर दिये।

जब ईकटोमी पहाड़ी के दूसरी तरफ दिखायी दिया तो उसने देखा कि उसको तो धोखा दिया गया है। वह वहीं से चिल्लाया — "थोड़ा सा मॉस मेरे लिये भी छोड़ दो ओ कायोटी, थोड़ा सा मॉस मेरे लिये भी छोड़ दो।"

ईकटोमी हॉफता हुआ बोला — "यह नाइन्साफी है। तुमने तो मेरे लिये बिल्कुल भी मॉस नहीं छोड़ा। तुमने तो मुझे एक मौका भी नहीं दिया।"

कायोटी मुस्कुराते हुए और मॉस चाटते हुए बोला — "मैंने तो तुमको वैसा ही न्याय से भरा मौका दिया जैसा तुमने घास के मैदान वाले कुत्तों को दिया था।"

कायोटी को जब लगा कि उसने काफी खा लिया है तो वह वहॉ से भाग लिया।

ईकटोमी चिल्लाया — "ज़रा तुम रुको तो सही। तुम चोरी करते हो। तुम किसी काम के नहीं हो। मैं तुम्हें देख लूँगा।"

और फिर इकटोमी अपने रास्ते चला गया क्योंकि सारे कुत्ते तो कायोटी और उसके रिशतेदार खा गये थे। अब वहॉ कुछ बचा ही नहीं था।

बच्चो तुम क्या सोचते हो कि बाद में ईकटोमी ने कायोटी का कुछ देखा होगा?

13 ईकटोमी और बतखें[40]

यह लोक कथा तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के अमेरिका देश के आदिवासियों की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार ईकटोमी[41] कहीं जा रहा था। पर वह अपना घोड़ा ढूँढ रहा था क्योंकि वह उस पर परेड में चढ़ना चाहता था।

उसने मन में सोचा — "आज तो मैंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन रखे हैं। मैं अपने घोड़े पर चढ़ कर तो बहुत ही शानदार लगूँगा।

मैं परेड में आगे आगे चलूँगा। सब लोग मुझे देखेंगे। वे अपने बच्चों से कहेंगे — "वह देखो, वह हमारी लड़ाई का सरदार जा रहा है जो बहादुरों से भी बहादुर है।"

ईकटोमी चलता जा रहा था चलता जा रहा था और अपने आप ही आप बोलता जा रहा था — "पर मेरा घोड़ा कहाँ गया? मुझे

[40] Iktomi and the Ducks – a story of Native American Indians, North America.
Adapted from the book "Iktomi and the Ducks: a plains Indian story",. by Paul Goble. NY, Orchard Books. 30 pages unnumbered. A 1-story Children's Book with pictures
[This is the story like "Skunk Ne Caayotee Ko Pachhaadaa" story. Read it in this book.
[41] Iktomi is a spider fairy but can take any form.

यकीन है कि जरूर ही उसे किसी सफेद आदमी[42] ने चुराया है। और अगर उसने नहीं चुराया तो फिर वह गया कहॉ?"

ईकटोमी ने इधर देखा उधर देखा पर उसको अपना घोड़ा कहीं दिखायी नहीं दिया।

इतने में ईकटोमी ने कुछ बतखों को एक तालाब में आनन्द करते देखा तो उसको ख्याल आया "भुनी हुई बतखें"। काश मैं इन बतखों को पकड़ सकता।

ईकटोमी ने कुछ सोचा और फिर वह कुछ झाड़ियों के पीछे छिप गया और वहॉ से एक मोटी सी डंडी तोड़ ली।

फिर उसने अपना कम्बल जमीन पर बिछाया और मुट्ठी भर भर कर घास तोड़ कर उसने उस कम्बल पर उसका एक बहुत बड़ा ढेर बना लिया। फिर उसने वह डंडी और घास दोनों उस कम्बल में लपेट ली।

वह पोटली उसने अपने कन्धे पर डाल ली और उस भारी सी पोटली को अपने कन्धे पर ले कर तेज़ी से उस तालाब के किनारे की तरफ चल दिया जहॉ वे बतखें तालाब में आनन्द कर रही थीं।

वह ऐसे चलने का बहाना कर रहा था जैसे कि वह बहुत जल्दी में हो। और यह दिखाने के लिये वह अपने माथे से पसीना भी पोंछता जा रहा था।

[42] Translated for the word "White Man". As these stories are from Native Indians of America they call the immigrants from Europe as White Men. In the whole Africa all people from Europe, America, Russia, China etc are called "White Men",

बतखें उसको देख रही थीं। उन्होंने उसको पुकारा — "ओ ईकटो। यह तुम्हारी पीठ पर क्या है?"

ईकटोमी चलता रहा जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं।

बतखें फिर बोलीं — "ईकटो, रुक जाओ। हमसे बात तो करो। तुम्हारे इस कम्बल में क्या है?"

ईकटोमी बोला — "मेरा यह कम्बल गीतों से भरा है। मैंने इन गीतों को अभी अभी धुन में बाँधा है। मैं इनको गाँव के पाउवाउ[43] में गाने वाला हूँ। हर आदमी इन गीतों पर नाचना चाहेगा।"

बतखों ने उससे जिद की — "तुम कुछ गीत हमको भी तो सुनाओ न ईकटो।"

कुछ और बतखें भी बोलीं — "हाँ हाँ कुछ गीत हमको भी तो सुनाओ न।"

वह बोला — "मुझे अफसोस है कि मैं रुक नहीं सकता। मुझे पाउवाउ में पहुँचने की बहुत जल्दी है।"

बतखों ने फिर उससे कुछ गीत सुनाने की प्रार्थना की — "सुनाओ न ईकटो।"

[43] A Pow-wow (also Powwow, Pow wow or Pau wau) is a gathering of some of North America's Native People. A similar gathering by California Native Peoples usually in the fall is called a Big Time. A modern Pow-wow is a specific type of event for Native American people to meet and dance, sing, socialize, and honor Native American/First Nations culture. Pow wows may be private or public. There is generally a dancing competition, often with significant prize money awarded. Pow-wows vary in length from a one-day event, to major Pow-wows called for a special occasion which can be up to one week long.

ईकटोमी बोला — "अच्छा ठीक है सुनाता हूँ, पर बस केवल एक गीत।"

यह सुन कर बतखें किनारे पर आ गयीं और हिलती हुई छोटे छोटे कदमों से किनारे पर चलने लगीं।

इकटोमी ने अपनी पोटली में अपना हाथ डाला और घास का एक पत्ता निकाला और बतखों से बोला — "मैं यह गाना गाऊँगा। तुम लोग ऐसा करो कि एक गोले में इकट्ठी हो जाओ और फिर हम सब एक साथ गायेंगे और नाचेंगे।

मैं जो अभी गीत गाऊँगा वह एक बहुत ही खास गीत है। इसमें तुम सबको अपनी ऑखें बन्द कर के रखनी है। अगर तुम उनको खोलोगी तो वे लाल हो जायेंगीं। मैं अपने ढोल की डंडी[44] से जमीन पर ताल देता रहूँगा।"

यह कह कर उसने अपनी पोटली से वह मोटी वाली डंडी निकाली और बोला — "अच्छा अब अपनी ऑखें बन्द करो और मेरे गीत पर नाचना शुरू करो –

ऑखें बन्द करो और मेरे साथ नाचो उनको बन्द रखना वरना वे लाल हो जायेंगीं
ऑखें बन्द करो और मेरे साथ नाचो

[44] Translated for the word "Drumstick"

ईकटोमी अपनी उस डंडी से जमीन पर ताल देता जा रहा था। थम्प थम्प थम्प थम्प। ताल देते देते ईकटोमी चिल्लाया — "पैर पटक पटक कर नाचो, ज़ोर ज़ोर से नाचो।"।"

बतखें उसके साथ साथ नाचने लगीं, ऑखें बन्द कर के, पैर पटक पटक कर, ज़ोर ज़ोर से, अपनी पूरी ताकत के साथ।

अचानक ईकटोमी ने जमीन पर ताल देने की बजाय बतखों के सिर पर डंडी मारना शुरू कर दिया। थम्प थम्प – एक बतख मर गयी। थम्प थम्प – फिर दूसरी बतख गयी।

इस तरह से ईकटोमी ने कई बतखें मार दीं। एक बतख ने आधी ऑख खोल कर कोने से देखा कि ईकोटोमी क्या कर रहा है।

वह चिल्लायी — "ए बतखों भागो। ईकटोमी तो हमको मार रहा है।" यह सुन कर सारी बतखें वहॉ से उड़ कर भाग गयीं। ईकटोमी ने यह कितना भयानक काम किया, किया न?

क्या कभी तुमने देखा है कि कुछ बतखों की ऑखें लाल होती हैं। ये बतखें उन्हीं बतखों के बच्चे हैं जिन्होंने नाचते समय अपनी ऑखें खोलीं थीं।

फिर ईकटोमी ने आग जलायी। उसने उन मरी हुई बतखों को लोहे की सलाइयों में घुसाया और उनको आग के चारों तरफ भुनने के लिये रख दिया। एक बतख को उसने राख के अन्दर भुनने के लिये रख दिया।

जैसे जैसे उन बतखों में से उनके भुनने की खुशबू आती जा रही थी उसके मुँह में पानी आता जा रहा था और उसका पेट बोलता जा रहा था "मुझे खाना चाहिये"।

हवा बहने लगी थी। पेड़ भी उस हवा से इधर से उधर हिलने लगे थे। इस हवा से दो पेड़ चरचराये और आपस में टकरा गये। उनके टकराने की आवाज ईकटोमी को बहुत बुरी लगी।

वह उनसे बोला — "भाई भाई को आपस में लड़ना नहीं चाहिये। तुम लोग अपनी लड़ाई बन्द करो वरना मुझे खुद आ कर तुम लोगों को अलग करना पड़ेगा।"

जब पेड़ों ने उसकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया तो ईकटोमी उन दोनों में से एक पेड़ पर चढ़ गया और उन पेड़ों को अलग अलग करने लगा।

जब वह ऐसा कर रहा था तो हवा चलनी बन्द हो गयी और वह उन दोनों पेड़ों के बीच फँस गया क्योंकि वे पेड़ हिलने बन्द हो गये थे।

वह चिल्लाया — "यह तुम क्या कर रहे हो पेड़ों? मुझे जाने दो। मैं ईकटोमी हूँ मैं तुमको नीचे गिरा दूँगा और काट दूँगा।"

वह वहाँ से छूटने की कोशिश करने लगा। वह सीधा हुआ□ वह टेढ़ा हुआ। उसने पेड़ों को हाथ से मारा, पैर से मारा पर उन्होंने तो उसको बन्दी बना कर रखा हुआ था।

कायोटी दूर खड़ा यह सब देख रहा था। वह धीरे धीरे ईकटोमी की आग के पास आया। उसको अपनी आग के पास आया देख कर ईकटोमी वहीं से चिल्लाया — "भागो वहॉ से। मैं तुमको कुछ नहीं दूँगा।"

पर कायोटी ने कुछ नहीं सुना और बतखें खाने में लग गया।

जब ईकटोमी ने देखा कि कायोटी ने उसकी सारी भुनी हुई बतखें खा ली हैं तो उसने कायोटी से प्रार्थना की — "कम से कम मेरे लिये तुम वह राख में भुनी हुई बतख तो छोड़ दो, वह मेरी है।"

कायोटी ने ईकटोमी की तरफ पीठ कर ली ताकि वह यह न देख सके कि वह क्या कर रहा था। उसने राख में से बतख निकाली, उसको लाल कोयलों से भरा और फिर उसको राख में उसी जगह ही दबा दिया।

यह सब कर के कायोटी मुस्कुराया और अपनी बतखों का मॉस चाटते हुए धीरे धीरे अपने रास्ते चला गया।

कुछ देर में ही हवा फिर से बहने लगी और ईकटोमी उन पेड़ों के बीच में से छूट गया। पेड़ से उतर कर वह तुरन्त ही अपनी आग की तरफ भागा और अपनी राख में दबायी हुई बतख बाहर निकाली।

उसने भगवान को लाख लाख धन्यवाद दिया कि कायोटी ने कम से कम उसके लिये उसकी वाली बतख, जो सबसे अच्छी बतख थी, छोड़ दी थी।

वह बहुत भूखा था सो उसने एक तुरन्त ही उसमें से एक बड़ा सा कौर काटा – और पता है उसे क्या मिला? एक बड़ा सा मुँह भर कर जलते कोयले।

वह तो ऊपर नीचे उछलने कूदने लगा और मुँह में से अंगारे और राख चारों तरफ थूकने लगा। फिर वह तालाब की तरफ दौड़ा और दौड़ कर पानी में कूद गया।

कुछ देर बाद जब उसके मुँह की गर्मी कुछ शान्त हुई तो वह बोला — "ठहर जा ओ चोर कायोटी, मैं तुझे अभी देखता हूँ।"

कहता हुआ और शरीर से पानी टपकाता हुआ वह अपने घर की तरफ चला गया।

इन बतखों के चक्कर में ईकटोमी तो यह भूल ही गया कि वह अपना घोड़ा ढूँढने निकला था। तो फिर क्या हुआ उसके घोड़े का?

14 कायोटी और कछुआ[45]

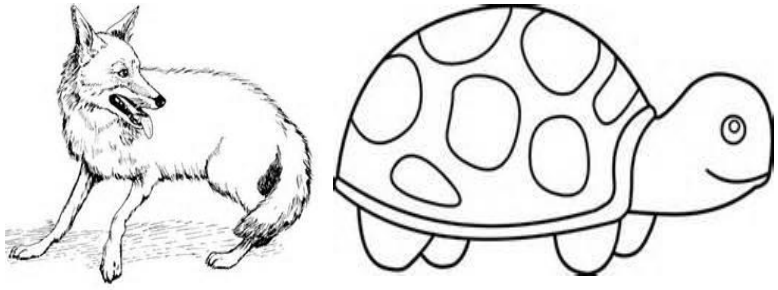

यह बहुत पहले की बात है कि एक सुबह जब जमीन कुछ सीली सीली सी थी और ठंडी थी एक कछुआ[46] नदी के किनारे से पास की जमीन पर मीठे मीठे पौधे खाने के लिये निकल गया।

बाद में उसको ऐसा लगा कि वह नदी से जितना ज़्यादा दूर जाता जा रहा था वे पौधे उतने ही ज़्यादा मीठे होते जा रहे थे। सो वह कछुआ मीठे पौधे खाते खाते नदी के किनारे से काफी दूर निकल गया और उसको समय का ख्याल ही नहीं रहा।

वह धीरे धीरे नदी से दूर जाता जा रहा था। उसको इस बात का भी ध्यान नहीं था कि सूरज जो सुबह केवल धरती के ऊपर से ही झॉक रहा था अब उसने सारी दुनियॉ को अपनी चपेट में ले लिया था।

---

[45] The Coyote and the Turtle – a story from Native Americans, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=9
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[46] Translated for the "Turtle". Turtles normally live in water and cannot live wthout it for a long time that is why they live near it and as soon as the Sunlight becomes strong they again enter the water.

अगर वह कछुआ ज़्यादा अक्लमन्द होता तो वह नदी के किनारे के पास ही ठहरता और वहीं घूमता। क्योंकि हर जानवर का बच्चा जानता है कि कछुए को क्या याद रखना चाहिये।

पानी के कछुओं को गीली जमीन में ही रहना चाहिये क्योंकि अगर वे ज़्यादा सूख जाते हैं तो उनके जोड़ अटक जाते हैं और फिर वे चल नहीं सकते। इसके अलावा अगर सूरज ज़्यादा ज़ोर से चमकता है तो उसकी गर्मी से वे मर भी जाते हैं।

सो वह कछुआ धीरे धीरे चला जा रहा था कि सूरज पहाड़ी के ऊपर तक आ गया और उसके सीधे ऊपर चमकने लगा। यह देख कर वह वापस घूमा और अपनी सुरक्षा के लिये नदी के किनारे की तरफ भागने लगा।

पर जैसा कि जानवरों के बच्चे आग के पास बैठ कर सीखते हैं कि पानी वाले कछुए तेज़ नहीं भाग सकते और यह तब ज़्यादा सच होता है जब कि वे पानी से बहुत देर तक बाहर रहे हों।

सो कछुआ क्योंकि पानी से काफी देर तक बाहर था वह भी तेज़ नहीं चल पा रहा था। वह बहुत धीरे चल रहा था और सूरज बहुत गर्म था।

कछुआ सूखा सूखा होता जा रहा था और वह धीरे और और धीरे चलता जा रहा था। आखिर वह एक ऐसी ऊँची जगह आ गया जहाँ से नदी दिखायी देती थी। वहाँ भी उसको सूरज की गर्मी बहुत लग रही थी।

कछुए को मालूम था कि थोड़ी ही देर में वह और नहीं चल पायेगा सो धूप से बचने के लिये वह छाया में चला गया और एक गड्ढे में घुस गया।

पर सूरज जैसे रोज करता है वैसे ही वह उस दिन भी कर रहा था। वह अपने जीवों को देखना चाहता था सो वह चलता ही रहा। जल्दी ही सूरज की धूप फिर से कछुए के ऊपर चमकने लगी। कछुआ बेचारा धीरे धीरे रोने लगा।

जब यह सब हो रहा था तो कायोटी[47] उधर से गुजर रहा था। क्योंकि कछुआ गड्ढे में था इसलिये कायोटी उसको देख तो नहीं पाया पर उसको कुछ ऐसी आवाज आयी जैसे कोई गा रहा हो।

हर जानवर का बच्चा आग के पास बैठ कर यह सीखता है कि कायोटी को गाना बहुत पसन्द है। उसको हर रात चॉद को देख कर गाते हुए देखा सुना जा सकता है – हालॉकि बहुत सारे लोग उसके गाने को उसका चिल्लाना बोलते हैं।

वह गाना सुन कर उसको लगा कि वह यह जाने कि वह कौन गा रहा था ताकि वह उसका नया गाना सीख सके सो उसने एक पत्थर के पीछे झॉका जहॉ वह सोच रहा था कि वहॉ से वह आवाज आ रही थी।

[47] Coyote, pronounced as Ka-yo-tee, is a small desert wolf. He is the hero of many Native Americans' folktales.

जब उसने उधर झाँका तो उसको कछुए के खोल का केवल ऊपरी हिस्सा दिखायी दिया। कायोटी ने उससे पूछा — "कछुए भाई, यह तुम कौन सा दुखी गाना गा रहे थे मुझे भी सिखाओ न।"

कछुए ने यह तो नहीं माना कि वह रो रहा था पर वह बोला कि मैं गाना नहीं गा रहा था।

कायोटी बोला — "नहीं, तुम गाना गा रहे थे। मैंने तुमको गाते हुए सुना और मैं तुम्हारा वाला गाना सीखना चाहता हूँ। अगर तुम मुझे अपना वाला गाना नहीं सिखाओगे तो मैं तुमको पूरा का पूरा खा जाऊँगा।"

कछुआ हालाँकि जानता था कि वह उसको खा सकता था पर फिर भी वह बोला — "तुम्हारा खाना मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता क्योंकि मैं अपने खोल के अन्दर चला जाऊँगा और मैं उसमें जा कर बैठ जाऊँगा।"

कायोटी फिर बोला — "अगर तुम मुझको वह दुख भरा गाना नहीं सुनाओगे और सिखाओगे तो मैं तुमको नदी में फेंक दूँगा।"

कछुआ चिल्लाया — "ओह कायोटी, मेहरबानी कर के मुझे नदी में मत फेंकना वरना मैं डूब जाऊँगा। मुझे नदी में नहीं फेंकना कायोटी।"

पर कायोटी तो इस बात पर कि कछुए ने अपना गाना उसको नहीं सिखाया इतना गुस्सा हुआ कि उसने कछुए को अपने मुँह में

पकड़ कर बहुत ज़ोर से हिलाया और नदी के सबसे गहरे हिस्से में फेंक दिया।

यही तो कछुआ चाहता था। कछुआ पानी के अन्दर तैरता रहा जहॉ कायोटी उसको कभी नहीं पकड़ सकता था।

कुछ देर बाद उसने अपना मुँह पानी के बाहर निकाला और बोला — "धन्यवाद कायोटी भाई, मुझे पानी में फेंकने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

क्योंकि यह तो मेरा घर है। मेरे पास तो यहॉ तक आने का कोई रास्ता ही नहीं था। तुमने मुझे यहॉ फेंक दिया अच्छा किया। मेरी इस सहायता के लिये तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद।"

यह सुन कर तो कायोटी और भी गुस्सा हुआ और पैर पटकता हुआ वहॉ से चला गया। एक तो वह कछुए से बेवकूफ बन गया था दूसरे वह उससे नया गाना भी नहीं सीख पाया था।

आज भी तुम कभी कभी कायोटी को नदी के पास झाड़ियों में कुछ सूँघते और गड्ढों में झॉकते पा सकते हो।

पर सब जानवरों के बच्चे आग के पास बैठ कर यह सीखते हैं कि कायोटी वहॉ क्या कर रहा है – कायोटी अभी भी कछुए से बदला लेने के लिये उसको वहॉ ढूँढ रहा है।

15 कायोटी और विशपूश बीवर[48]

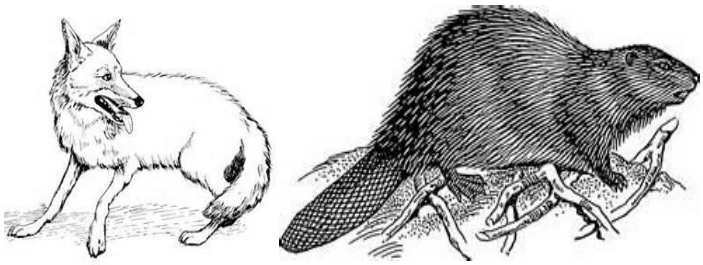

विशपूश नाम का एक बहुत ही बड़ा बीवर[49] या नेवला क्लेअल्लुम झील[50] में रहता था। वहॉ रोज बहुत सारे जानवर मछलियॉ पकड़ने के लिये आते थे पर विशपूश उन सबको डरा धमका कर और पानी के छपाके मार मार कर वहॉ से भगा देता था।

और अगर वे इस तरह से नहीं भागते थे तो वह उनको झील की गहरी जगह में खींच लेता था और उनको वहॉ डुबो कर मार देता था।

विशपूश जिस तरीके से उन जानवर लोगों के साथ बर्ताव करता था कायोटी यह सब देख कर उससे बहुत परेशान था। कायोटी ने सोच लिया कि वह विशपूश बीवर को मार ही डालेगा।

---

[48] The Coyote and Wishpoosh – a folktale from the Chinook Tribe, Native Americans, North America. Adapted from the Web Site :
http://americanfolklore.net/folklore/2010/08/coyote_and_wishpoosh.html
retold by SE Schlosser.
[This story shows as how the Columbia River in North-Western America was made and how some Indian tribes were created.]

[49] Beaver is a big rat like animal who can dig the earth very quickly. In Hindi it is called Nevala. See its picture above.

[50] Cle-al-Lum Lake in North-Western American Continent

सो वह अपनी कलाई में एक भाला बॉध कर क्लेअल्लुम झील पहुँच गया और वहॉ जा कर मछली पकड़ने लगा।

जैसे ही विशपूश ने इस कायोटी आदमी को अपने राज्य में देखा तो तुरन्त ही उसके ऊपर हमला कर दिया। कायोटी ने भी उसके ऊपर अपना भाला फेंका जो उसके शरीर को भेद गया। विशपूश भी कायोटी को अपने साथ खींचता हुआ तुरन्त ही झील की तली में चला गया।

विशपूश और कायोटी दोनों झील की तली में लड़ते रहे जिससे झील का सारा पानी उछल उछल कर बाहर निकल गया। वह पानी पहाड़ों के ऊपर से जा कर खाइयों में गिर गया और वहॉ से किट्टिटास घाटी[51] में जा कर इकट्ठा हो गया। अब यहॉ विशपूश वाली झील से भी बड़ी एक झील बन गयी।

कायोटी और विशपूश दोनों उस झील में कूद पड़े। वे एक दूसरे पर नयी ताकत से चिल्ला रहे थे और नयी ताकत से एक दूसरे से लड़ रहे थे कि उस झील का पानी भी उसकी हद से बाहर चला गया।

अब वह पानी उस झील में से निकल कर कई नदियों के पानी में मिल गया और उसने टोपेनिश[52] में एक और नयी झील बना दी।

[51] Kittitas Valley in North-Western American Continent

[52] Toppenish – name of a place in North-Western American Continent

विशपूश लड़ाई छोड़ने वाला नहीं था। वह कायोटी को काट रहा था, उसको पंजों से मार रहा था और उसको उस बड़ी झील में डुबोने की कोशिश कर रहा था।

कायोटी भी उससे बहुत ज़ोर से लड़ रहा था कि इस झील में से भी पानी निकल कर बाहर आ गया और जहॉ कोलम्बिया और याकीमा और स्नेक[53] नदियॉ आ कर मिलती थीं वहॉ वह एक इतनी बड़ी झील के रूप में आ कर इकट्ठा हो गया जितनी बड़ी झील कभी किसी ने देखी भी नहीं थी।

कायोटी और विशपूश एक दूसरे को खींच रहे थे, नाखूनों से नोच रहे थे, दॉतों से काट रहे थे कि वहॉ भी वह झील टूट गयी और उसमें से बहुत सारा पानी कोलम्बिया नदी में मिल कर बह निकला और समुद्र की तरफ जाने लगा।

कायोटी और विशपूश बीवर जब दोनों उस पानी के तेज़ बहाव के साथ बहे जा रहे थे तो एक दूसरे के ऊपर कूद रहे थे लुढ़क रहे थे।

कायोटी ने अपने आपको उस पानी की बड़ी बड़ी लहरों से बचाने के लिये झाड़ियों पेड़ों और चट्टानों को पकड़ा तो उसकी इन कोशिशों से कोलम्बिया नदी की घाटियॉ बन गयीं।

[53] Columbia, Yakima and the Snake Rivers – all these rivers are in North-Western part of USA near Washington State.

पर कायोटी अपने आपको उस पानी में से नहीं निकाल सका सो वह विशपूश के ऊपर लुढ़क कर उस नदी के मुँहाने के नमकीन पानी में गिर पड़ा।

विशपूश बहुत गुस्सा था। वह इस कायोटी को पीटने का इरादा रखता था जिसने उसको उसकी खूबसूरत झील से निकाल दिया था सो वह भी कायोटी के पीछे पीछे समुद्र में निकल आया था।

विशपूश अपने आगे आयी सारी सैमौन मछलियों को अपने सामने से उठा कर एक ही कौर में खा गया ताकि उसके अन्दर काफी ताकत आ जाये।

उसके बाद वह समुद्र में कायोटी के पीछे पीछे चला। उसी समय उसको एक व्हेल मछली दिखायी दी तो उसने उसको उसके चारों तरफ अपनी बॉहों से घेर कर पकड़ लिया और उसको पूरा का पूरा खा गया।

कायोटी पहले तो उस बड़े बीवर की इस ताकत को देख कर बहुत डर गया परन्तु वह बहुत चालाक था। उसने एक तरकीब सोची।

उसने अपने आपको एक पेड़ की डंडी में बदल लिया और वहॉ से बहता हुआ मछलियों में जा कर मिल गया जब तक कि उसको उस बीवर ने निगल नहीं लिया।

बीवर के पेट के अन्दर जा कर वह अपने असली रूप में आ गया। फिर उसने अपना चाकू निकाला और बीवर के शरीर को

अन्दर से काटना शुरू कर दिया। इससे उस बड़े बीवर को बहुत दर्द हुआ और वह कुछ ही देर में मर गया।

कायोटी अपनी इस लम्बी दौड़ से बहुत थक गया था सो उसने अपने दोस्त मसक्रैट[54] को बुलाया जिसने उसको उस बड़े बीवर के शरीर को किनारे तक लाने में सहायता की।

फिर दोनों ने मिल कर उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े कर के सारी जमीन पर बिखेर दिये जिससे वहॉ आदमियों की बहुत सारी जातियॉ पैदा हो गयीं।

नैज़ पर्स लोग उस बड़े बीवर के सिर से पैदा हुए। केयूसेस लोग उस बड़े बीवर की बड़ी बड़ी बॉहों से पैदा हुए और इसी वजह से वे लड़ाई में बहुत बहादुर थे।

कायोटी ने उसकी पसलियों से याकीमा लोग बनाये और उसके पेट से चिनूक लोग बनाये। बीवर की टॉगों से उसने क्लिकीटैट लोग बनाये ताकि वे भागने में बहुत होशियार हो सकें।

बीवर का जो बाकी मॉस और खून बच गया था उससे कायोटी ने स्नेक नदी वाले इन्डियन्स[55] बना दिये जो केवल लड़ाई और खून

[54] Muskrat – is a big rabbit type animal native to North America. See its picture above.

[55] Nez Perce tribe (see a man's picture above of that tribe), Cayuses tribe, Yakimaa tribe, Chinook tribe, Klickitat tribe and Snake River Indians

पर ही जीते थे। इस तरह उत्तरी अमेरिका की मूल निवासियों की ये सब जातियॉ बनीं।

इन जातियों को बनाने के बाद कायोटी आराम करने के लिये कोलम्बिया नदी के ऊपर की तरफ लौटा पर अपनी इस थकान में उसका ध्यान इस तरफ बिल्कुल भी नहीं गया कि समुद्र के किनारे रहने वाली जातियों वाले लोगों के तो मुॅह ही नहीं था।

तभी एकाहनी देवता[56] उधर से निकले तो उन्होंने सारे समुद्री किनारे वाले लोगों को इकट्ठा किया और उनके मुॅह काट दिये। कुछ के मुॅह उन्होंने बहुत बड़े काटे और कुछ के बिल्कुल नाम के लिये। इसी लिये उधर के लोगों के मुॅह ठीक नहीं हैं।

[56] Ekahni god

16 खरगोश और कायोटी[57]

"उँह, गर्र गर्र।" एक खरगोश अपने कन्धों से एक चट्टान को खिसका रहा था। कायोटी[58] ने यह आवाज सुनी तो वह खरगोश के पास आया और उससे पूछा — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो खरगोश भाई?"

खरगोश हाँफते हाँफते बोला — "मुझे लगा कि शायद सबको यह बात पता है कि आसमान गिरने वाला है सो मैं सबको बचाने के लिये इन चट्टानों को ऊपर की तरफ खिसका रहा हूँ।"

कायोटी ने पूछा — "पर यह बात किसी ने मुझे पहले क्यों नहीं बतायी?"

खरगोश बोला — "यह तो मैं नहीं बता सकता पर मैं यह बात अब तुम्हें बता रहा हूँ। ये चट्टानें आसमान को थामे हुए हैं। अगर तुम इन चट्टानों को पकड़े रहोगे तो मैं एक भारी सा डंडा ले आऊँगा

---

[57] Rabbit and Coyote - a folktale from Maya, Mexico, North America. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/mex ico_folktale.htm Collected and retold by Phillip Martin The Maya civilization extended throughout the Southern Mexico and into Guatemala, Belize, Honduras and El Salvador countries. They continued until the arrival of the Spanish conquistadors. Although the empire is long gone, the Maya people survived the Spanish colonization and still live in the regiona where their ancestors did. This tale about the trickster Rabbit is a part of their rich cultural history.

[58] Coyote – Pronounced as "Kaayotee". Coyote is small desert wolf. He is the hero of many American Indian folktales.

जो इनको ऊपर रुकने में सहारा देगा और इस तरीके से हम सब बच जायेंगे।"

कायोटी ने अपने दोनों हाथ उस चट्टान को रोक कर रखने में लगा दिये और अपनी सारी ताकत लगा कर उसको रोक कर खड़ा हो गया।

अब आसमान तो किसी हालत में गिरने वाला था नहीं चाहे वह कुछ करता या नहीं करता तो भी। वह भी "उॅह, गर्र गर्र।" करता रहा पर वे चट्टानें किसी तरह थामे रहा।

खरगोश अपनी मुस्कुराहट छिपाता हुआ वहॉ से भाग गया। बेचारा कायोटी उस चट्टान को सहारा देता हुआ वहीं खड़ा रहा। कुछ देर बाद जब वह थक गया तो सहायता के लिये चिल्लाया पर खरगोश तो वह भारी डंडा ले कर वापस ही नहीं आया।

वह तो गॉव में सबको बेवकूफ कायोटी के साथ अपनी सबसे नयी वाली चाल के बारे में बताने में लगा हुआ था।

जब कायोटी बहुत थक गया तो उसने वह चट्टान पकड़नी छोड़ दी। वह बोला — "अब अगर आसमान मुझ पर गिर भी जाये तो भी मैं इन चट्टानों को अब और सहारा नहीं दे सकता।"

वह बेचारा कराहता हुआ और खरगोश को बुरा भला कहता हुआ वहॉ से एक तंग घाटी में सुरक्षित रहने के लिये चला गया। खैर, आसमान को तो न गिरना था न वह गिरा और कायोटी को

किसी सुरक्षा की जरूरत भी नहीं थी। पर बेवकूफ कायोटी ने इससे कुछ सीखा भी नहीं।

कुछ दिन बाद एक रात खरगोश एक तालाब पर आया तो उसने उसके पानी में चॉद की परछाईं देखी तो उसके चेहरे पर एक मुस्कुराहट खेल गयी और उसके दिमाग में उस बेवकूफ कायोटी के साथ खेलने के लिये एक और चाल आयी।

कुछ ही देर में उसको अपने दोस्त के उस तालाब की तरफ आने की आवाज आयी।

तुरन्त ही खरगोश ने उस तालाब से पानी पीना शुरू कर दिया। पर जैसे पहले वह बहुत ही धीरे से पानी पिया करता था अभी वह वैसे उसका पानी नहीं पी रहा था। वह बहुत ही जल्दी जल्दी और ज़ोर की आवाज के साथ पानी पी रहा था।

जब कायोटी ने उसको इस तरह पानी पीते देखा तो पूछा — "दोस्त खरगोश, यह क्या हो रहा है? तुम तो पानी ऐसे कभी नहीं पीते। आज तुम्हें क्या हो गया है?"

खरगोश बोला — "माफ करना दोस्त, इस तालाब की तली में बहुत सारा खाना है। इसलिये मैं इसको खाली करना चाह रहा हूँ।"

कायोटी यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने पूछा — "क्या सचमुच?"

खरगोश बोला — "हॉ हॉ, आओ तुम अपने आप ही तालाब में देख लो न।"

बेवकूफ कायोटी ने पानी में झॉक कर देखा तो उसमें उसे चॉद की पीले रंग की परछाईं दिखायी दी। वह बोला — "अरे यह तो चीज़[59] लगती है और चीज़ मुझे बहुत पसन्द है। क्या मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ?"

खरगोश बोला — "अब जब तुमने पूछा ही है तो मेरे दिमाग में एक तरकीब आयी है। अगर हम दोनों इस तालाब के सारे पानी को पी लें तो हम यह खाना जल्दी निकाल सकते हैं।"

कायोटी ने फौरन सिर हिलाते हुए कहा — "तरकीब तो अच्छी है।"

खरगोश ने सलाह दी — "क्योंकि तुम मुझसे बड़े हो तो पहले तुम इस तालाब का पानी पीना क्यों नहीं शुरू करते? तुम्हारे जैसा एक बड़ा मजबूत कायोटी तो इस तालाब का सारा पानी भी पी सकता है। पर अगर तुमको मेरी सहायता चाहिये तो मैं भी तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

अब छोटे से खरगोश से सहायता मॉगना तो कायोटी को अपनी इज़्ज़त कुछ खराब करना लगा सो वह मुस्कुरा कर बोला — "नहीं

[59] Cheese is a kind of Indian type of Paneer, but it is processed. It is very popular food in Western world.

नहीं, मुझे तुम्हारी सहायता की कोई जरूरत नहीं है। यह काम तो मैं अकेले ही कर सकता हूँ।"

यह कह कर कायोटी ने तालाब के किनारे से पानी पीना शुरू कर दिया। इतने में खरगोश बोला — "माफ करना कायोटी भाई, मैं अभी आया मुझे कुछ काम करना है।"

खरगोश ने कायोटी को यह नही बताया कि वह "कुछ काम" उसको क्या करना था – उसका वह कुछ काम था दूसरे जानवरों को यह बताना कि उसने बेवकूफ कायोटी को एक बार फिर से किस तरह बेवकूफ बनाया।

खुशकिस्मती से कायोटी ने खरगोश की बात सुनी नहीं और वह जल्दी जल्दी पानी गटक गटक कर पीता रहा।

वह उस तालाब का सारा पानी तो पी ही नहीं सकता था पर वह इतना पानी जरूर पी गया कि उसके पेट में दर्द हो गया। जब वह और नहीं पी सका तो वह बेचारा घर चला गया और जा कर सो गया।

उसके बाद उसकी चीज़ खाने की कभी कोई इच्छा नहीं हुई।

17 मरे हुओं की दुनियॉ में कायोटी और गरुड़[60]

इस कहानी का सबसे पहला रूप 19वीं सदी में संग्रह किया गया था। यह कहानी अमेरिका के याकीमा जनजाति के रहने की जगह फोर्ट सिमको[61] से ली गयी है।

जानवर लोगों के राज में कायोटी बहुत दुखी था क्योंकि लोग मर जाते थे और फिर आत्माओं के देश में पहुँच जाते थे। उसके चारों तरफ रोने और रोने की आवाजें गूँज रही थीं। वह बार बार यही सोचता कि मरे हुओं को ज़िन्दा लोगों की दुनियॉ में वापस कैसे लाया जाये।

कायोटी की बहिन मर गयी थी। कायोटी के कुछ दोस्त लोग भी मर गये थे। गरुड़ की पत्नी भी मर गयी थी और उसके दुख में वह भी रो रहा था।

कायोटी ने गरुड़ को तसल्ली देते हुए कहा — "मरे हुए लोग मरे हुओं के देश हमेशा के लिये नहीं जायेंगे। वे उन पत्तों की तरह हैं जो पतझड़ में कत्थई और मरे हुए हो कर गिर जाते हैं। पर वे

[60] Coyote and the Eagle in the Land of the Dead – a Yakima folktale from Native Americans, North America. Adapted from the Web Site : http://www.storytellingresearchlois.com/2016/09/911-and-coyote-story-keeping-public-in.html

[61] Yakima Tribe living in Fort Simcoe on Northwest side of North America where Raven also lives. You may like to read his stories in "Raven Ki Lok Kathayen-1" by Indra Publishing House in 2016 and "Raven Ki Lok Kathayen" by Prabhat Prakashan in 2020 both written by Sushma Gupta in Hindi.

फिर आ जाते हैं। जब नयी घास निकलती है फूल खिलते हैं चिड़ियें गाती हैं तब मरे हुए वापस आते हैं।"

पर गरुड़ वसन्त तक रुकना नहीं चाहता था। वह चाहता था कि मरे हुओं को तुरन्त ही वापस आना चाहिये। सो कायोटी और गरुड़ दोनों मरे हुओं के देश साथ साथ चल दिये। गरुड़ कायोटी के सिर के ऊपर उसके साथ साथ उड़ता जा रहा था।

कई दिनों की यात्रा के बाद वे एक ऐसी जगह आये जहॉ पानी ही पानी था। उस पानी के दूसरे किनारे पर बहुत सारे घर बने हुए थे।

कायोटी गरुड़ पर चिल्ला कर बोला — "जाओ कोई नाव ले कर आओ और हमें पानी के उस पार ले चलो।"

पर न तो कोई आवाज थी और न किसी के हिलने डुलने का एहसास। गरुड़ बोला — "यहॉ तो कोई है नहीं। लगता है कि इतनी दूर हम लोग बेकार ही आये हैं।"

कायोटी बोला — "सब लोग सोये हुए हैं। ये लोग दिन में सोते हैं और रात को बाहर निकलते हैं। हम लोग अँधेरा होने तक यहीं इन्तजार करते हैं।"

शाम होने पर सूरज ढल जाने के बाद कायोटी ने गाना शुरू किया तो चार आदमी उन घरों में से बाहर निकले। चारों ने एक नाव ली और उसे कायोटी और गरुड़ की तरफ खेना शुरू किया।

कायोटी ने अपना गाना जारी रखा तो चारों आत्माओं ने भी उसके साथ गाना शुरू कर दिया। वे अपनी पतवार से ताल देते जा रहे थे। पर नाव उनके बिना ही आ रही थी। वह अपने आप ही पानी को फैला रही थी।

जब वे कायोटी के पास तक आ गयी तो कायोटी और गरुड़ उसमें बैठ गये। नाव उन दोनों को ले कर फिर से चल पड़ी। जब वे मरे हुओं के टापू के पास पहुँचे तो पानी के उस पार ढोल बज रहे थे और नाच चल रहा था।

जब वे सब टापू पर उतर रहे थे तो आत्माओं ने उनको चेतावनी दी कि वे घरों में न जायें। वे अपने चारों ओर की चीज़ों को भी न देखें। अपनी ऑखें बन्द कर के रखें क्योंकि यह पवित्र जगह है।

कायोटी बोला — "पर हमें भूख लगी है और यहॉ ठंड भी लग रही है। मेहरबानी कर के हमें अन्दर आने दो।"

सो उन लोगों ने उन दोनों को चटाइयों के बने हुए एक बहुत बड़े से घर में जाने दिया जहॉ आत्माऐं ढोल की ताल पर नाच गा रहीं थीं। और उसमें बहुत सारी आत्माऐं थीं।

एक बुढ़िया उनके लिये एक चटाई की बोतल में सील मछली का तेल ले कर आयी। उसने उसमें एक पंख डुबोया और उनको तेल पिलाती रही जब तक उनकी भूख नहीं मिट गयी।

तब कायोटी और गरुड़ ने इधर उधर देखा तो उन आत्माओं ने रस्मी पोशाकें पहनी हुई थीं जो सीपियों और ऐल्क[62] के दॉतों से बहुत अच्छी तरह सजी हुई थी। उनके चेहरे रंगे हुए थे और उनके बालों में पंख लगे हुए थे।

ऊपर चॉद लटका हुआ था जिससे सारे घर में रोशनी फैल रही थी। चॉद के पास ही एक मेंढक खड़ा था जो सबकी देखभाल कर रहा था क्योंकि वह यहॉ बहुत पहले से आया हुआ था। उसको देखना था कि चॉद गाने नाचने वालों पर ठीक से चमक रहा है या नहीं।

कायोटी और गरुड़ उनमें से कुछ आत्माओं को जानते थे क्योंकि वे उनके दोस्तों की थीं। पर किसी ने दोनों अजनबियों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। किसी ने वह टोकरी भी नहीं देखी जो वह अपने साथ ले कर आया था। उसका प्लान था कि वह इसी टोकरी में आत्माओं को भर कर धरती पर ले जायेगा।

सुबह सवेरे ही आत्माओं ने वह घर छोड़ दिया ताकि वे दिन में सो सकें। तब कायोटी ने मेंढक को मार दिया उसके कपड़े लिये और खुद पहन लिये।

दिन बीत गया शाम को आत्माऐं फिर से नाचने गाने के लिये लौटीं। उनको यह मालूम नहीं था कि चॉद के पास जो मेंढक खड़ा

[62] Elk is a kind of bull with branched horns. See its picture above.

हुआ था वह उनका असली मेंढक नहीं बल्कि मेंढक के कपड़े पहने कायोटी था।

जब उनका नाच गाना सबसे ज़्यादा ज़ेर शोर से चल रहा था कायोटी ने चॉद निगल लिया। अॅधेरे में गरुड़ ने आत्माऐं पकड़ लीं और उनको कायोटी की टोकरी में रख दिया और उसका ढक्कन कस कर बन्द कर दिया। उसके बाद दोनों ज़िन्दा आदमियों की दुनियॉ को लौट चले। कायोटी टोकरी ले जा रहा था।

जब वे काफी दूर चल लिये तब उन्होंने टोकरी में शोर सुना तो वे उसको सुनने के लिये रुक गये। कायोटी बोला — "लगता है लोग ज़िन्दा हो रहे हैं।"

जब वे कुछ दूर और आगे चले तो उन्होंने टोकरी में बातें करने की आवाजें सुनी। आत्माऐं एक दूसरे से कह रही थीं "हम तो यहॉ किसी से टकरा रहे हैं।" कोई कह रहा था "मेरी तो टॉग में बहुत दर्द हो रहा था।" एक और आत्मा बोली "मेरी तो बॉहें और टॉगें दोनों में मोच आ रही है।"

कई आत्माऐं चिल्लायीं — "हमें बाहर निकालो। हमें बाहर निकालो।"

गरुड़ तुरन्त ही बोला — "नहीं नहीं।"

कुछ दूर जा कर कायोटी ने टोकरी नीचे रख दी। वह उसके लिये बहुत भारी हो गयी थी।

कायोटी ने फिर कहा — "अब हम इनको बाहर निकाल देते हैं। अब तो हम लोग आत्माओं की दुनियॉ से काफी दूर आ गये हैं। अब ये लोग वहॉ वापस नहीं जा पायेंगे।"

यह कह कर उसने टोकरी खोल दी। लोग फिर से अपनी आत्मा वाले रूपों में आ गये और हवा की तरह से चलने फिरने लगे और अपने मरे हुओं के टापू पर लौट गये।

पहले तो गरुड़ ने कायोटी को डॉटा पर फिर जल्दी ही उसको कायोटी की बात याद आ गयी – "अभी पतझड़ है। पत्तियों के गिरने का मौसम है जैसे आदमी मरते हैं। हमको वसन्त तक इन्तजार करना चाहिये जब कलियॉ खुलेंगी फूल खिलेंगे। हमको मरे हुओं के देश में वापस जाना चाहिये और फिर से कोशिश करनी चाहिये।"

कायोटी बोला — "नहीं। मैं बहुत थक गया हूॅ। मरे हुओं को हमेशा के लिये मरे हुओं की दुनियॉ में ही रहना चाहिये।"

सो कायोटी ने यह कानून बना दिया कि जो लोग मर गये हैं वे कभी ज़िन्दा नहीं होंगे।

शायद अगर उसने टोकरी नहीं खोली होती और आत्माओं को बाहर नहीं निकाला होता तो मरे हुए लोग हर वसन्त में घास और फूल और पेड़ों की तरफ वापस आ जाया करते।

इस कहानी का मतलब यह है कि हमारे शरीर के रहने की भी एक सीमा है और वह सीमा है हमारी मौत।

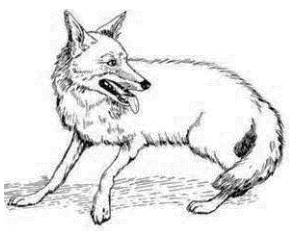

18 कायोटी का क्रिसमस[63]

कायोटी को तो यह पता ही नहीं था कि उस दिन क्रिसमस की शाम थी। उसको तो बस यह मालूम था कि वह बहुत भूखा था और उसका खाली पेट बहुत शोर मचा रहा था और कॅपकॅपाती ठंडी रात घिरती चली आ रही थी।

वह इन्डियन लोगों की एक बस्ती में एक पहाड़ी की चोटी पर चलता चला जा रहा था। उसके कान घूमते हुर टायरों और चलती हुई धातुओं की आवाज पर खड़े हो जाते थे।

उसके नीचे एक पुराना ट्रक खड़खड़ की आवाज करते हुए एक कच्ची पगडंडी पर एक घर की तरफ चला जा रहा था।

तभी बहिन रैवन[64] ऊपर काले आसमान से नीचे उतर कर आयी। उसने कायोटी के ऊपर एक चक्कर काटा और उसके सामने वाले पेड़ की एक टेढ़ी मेढ़ी शाख पर आ कर बैठ गयी।

वह कायोटी से बोली — "कायोटी, ओ शैतान कायोटी, आज तुम क्या चाल खेलने वाले हो?"

---

[63] Coyote Christmas – a folktale from Lakota Tribe, Native Americans, North America. Adapted from the book, "Coyote Christmas: a Lakota story". by SD Nelson. NY, Abrams Books for Young Readers. 2007.

[64] Raven is crow like bird and is hero of many Native American folktales. See its picture above.

कायोटी हॅसा। उसको काली चिड़िया का अपने साथ किया गया यह मजाक बुरा नहीं लगा क्योंकि उसको अपने चालाक कहलवाने के ऊपर बड़ा घमंड था।

वह बोला — "ओ मेरी पंखों वाली दोस्त, अगर तुम यहीं पास में घूमती रहो तो मैं तुम्हें दिखाता हूॅ कि मैं क्या करने वाला हूॅ। मैं सोचता हूॅ कि मैं उस दो टॉगों वाले जानवर के घर जाऊॅ और उससे मुफ्त का गर्म गर्म खाना झटक लूॅ।"

इतना कह कर वह चालाक कायोटी उस पहाड़ी के नीचे की तरफ चल दिया। बहिन रैवन भी उसके साथ साथ उसके ऊपर उड़ती हुई चल दी।

कायोटी ने घर के एक तरफ से अन्दर झॉका तो उसने देखा कि एक सफेद बालों वाली स्त्री एक काशीफल की पाई[65] ओवन में से निकाल कर बाहर रख रही थी।

उसको देख कर कायोटी के मुॅह में पानी आ गया और वह अपने होठ चाटने लगा। उसको इन दो टॉगों वाले जानवरों की एक बात बहुत अच्छी लगती थी और वह था उनका खाना। उनका खाना बहुत ही स्वादिष्ट होता था।

[65] Pumpkin pie – Pie is a baked dish filled with fruits or vegetables or meat between the layers of white flour. This is pumpkin pie so it is filled with pumpkin. It is very popular in North America. See its picture above.

इसके अलावा वह उनके बारे में यह भी सोचता था कि वे बेवकूफ होते हैं और उनको बेवकूफ बनाना बहुत ही आसान होता है।

एक छोटी लड़की सुन्दर सुन्दर पैकेट जिनमें रिबन बॅधे हुए थे एक के ऊपर एक रख रही थी।

उस चालाक ने वहॉ एक जुनीपर का पेड़[66], एक हिन्दुस्तानी मोरपंखी जैसा पेड़, भी रोशनी से सजा देखा जो उसको लगा कि वह उनके घर में ही उगा हुआ था।

कायोटी ने किसमस पेड़ के बारे में तो सुना था तो उसको लगा कि शायद आज ही किसमस की शाम होगी।

एक लड़का और एक लड़की लाल नाक वाले रेनडियर[67] का कोई बेकार का सा गाना गा रहे थे। कायोटी ने उस गाने की पूरी धुन सुनी और जब तक वह गाना खत्म होने पर आया तब तक तो वह खुद भी उस बेकार के गाने को गुनगुना रहा था।

[66] Juniper tree is evergreen with needle-like and scale-like leaves. Perhaps like Morepankhee tree of India.

[67] Reindeer, also known as caribou in North America, is a species of deer native to arctic, sub-arctic and Tundra etc regions. See its picture above.

पर कायोटी का खाली पेट फिर चिल्लाया और इस चिल्लाहट से उसके दिमाग में उन लोगों के साथ एक चाल खेलने का विचार आया।

उसने लाल कपड़े पहने एक आदमी की भी कहानियॉ सुन रखीं थीं जो बच्चों को किसमस की शाम को मिलने आया करता था। उसने सोचा कि अगर वह सैन्टा क्लौज़[68] बन कर उस घर में चला जाये तो शायद उसको वहॉ मुफ्त का खाना मिल जाये।

पर ऐसी बर्फीली रात में उसको सैन्टा क्लौज़ के कपड़े मिलेंगे कहॉ से□

सो उस चालाक ने इधर उधर देखना शुरू किया पर जैसे ही वह घर के कोने के पास से गुजरा तो वहॉ तो उसको एक बड़ा आश्चर्य मिल गया – वह था उस परिवार का पालतू कुत्ता। वह मकान के सामने वाले हिस्से के सायों में से निकल कर भौंकता हुआ उसकी तरफ बढ़ा।

कायोटी अपने पंजे उठा कर वहॉ से भागा और चिल्लाया "रुक जा ओ बेवकूफ कुत्ते वरना मैं तुझे घरेलू बिल्ली बना दूँगा।"

---

[68] Santa Claus also known as Father Christmas, Saint Nicholas, Saint Nick, Kris Kringle, or simply **Santa**, is a legendary figure originating in Western Christian culture who is said to bring gifts to the homes of well-behaved children on the night of Christmas Eve (24 December) or during the early morning hours of Christmas Day (25 December)

आश्चर्य। यह सुन कर तो वह कुत्ता जहॉ खड़ा था वहीं का वहीं रुक गया।

उसने अपना मुँह बन्द कर लिया, अपना सिर झुका लिया, अपनी दुम अपनी टॉगों में बीच में कर ली और अपने रहने की जगह लौट गया। क्योंकि वह एक बेवकूफ घरेलू बिल्ली नहीं बनना चाहता था।

फिर वह जानवर रखने की जगह की तरफ बढ़ा तो उसने देखा कि दो घोड़े और एक दूध देने वाली गाय अपने अपने बाड़ों में खड़े घास खा रहे थे।

उस बूढ़े कायोटी को देख कर घोड़े डर गये और अपने खुर जमीन पर पटक कर हिनहिनाने लगे। चालाक कायोटी चीखा — "चुप हो जाओ वरना मैं तुमको सूअर बना दूँगा।

यह सुन कर घोड़े भी तुरन्त ही चुप हो गये क्योंकि वे सूअर नहीं बनना चाहते थे पर डरी हुई गाय अपने आपको रँभाने से नहीं रोक सकी।

कायोटी उसके लकड़ी के बाड़े की तरफ गया और अपना पंजा उठा कर बोला — "ओ रँभाने वाली गाय, बस अब और न रँभा नहीं तो मैं तुझे उल्लू बना दूँगा और तू इस दरवाजे से उड़ जायेगी।"

दूसरे ही पल गाय के बाड़े के अन्दर से किसी के पंख फड़फड़ाने की आवाज आयी और एक उल्लू दीवार से टकराता हुआ रात के अँधेरे में बाहर उड़ गया।

इस सबके बीच कायोटी ने एक रेलिंग के ऊपर घोड़े का एक लाल रंग का कम्बल लटका देखा। उसके बीच में एक बड़ा सा छेद भी था।

"आहा, यह मेरे लिये बहुत बढ़िया काम करेगा।" कह कर कायोटी ने उस छेद में अपना सिर घुसा कर उसको पहन लिया और पेटी की जगह उसने पास में पड़ी एक रस्सी उठा कर अपनी कमर में बाँध ली।

इसके बाद उसने एक फटा कपड़ा अपने सिर पर बाँध लिया और वह घूम घूम कर गाने लगा — "मैं सिर से ले कर पैरों तक फटे कपड़े पहने हूँ पर मुझे उसकी चिन्ता नहीं है मैं उनको लाल बना लूँगा।" कह कर उसने एक फूँक मारी और वे सारे फटे कपड़े लाल पोशाक में बदल गये।

तभी कायोटी को एक खूँटी पर टँगी हुई एक भेड़ की खाल दिखायी दे गयी। उसने उस खाल का एक टुकड़ा अपने मुँह के नीचे बाँध लिया ताकि वह उसकी दाढ़ी लगे।

एक कोने में एक खाली थैला पड़ा था जो उसने वहीं पड़े भूसे से भर लिया और उसको अपने कंधे पर लटका लिया। अब वह बेवकूफ बड़ी शान से खड़ा हो कर अपनी तारीफ करने लगा।

घोड़ों ने उसको चुपचाप आश्चर्य से देखा – कायोटी अब काफी कुछ सैन्टा क्लौज़ जैसा लग रहा था।

अब वह चालाक सीधे घर की तरफ चला जहॉ मुफ्त का क्रिसमस वाला खाना उसका इन्तजार कर रहा था। वह सीढ़ियों के नीचे से कॉपते हुए कुत्ते के पास से गुजरा और बड़े विश्वास के साथ घर का दरवाजा खटखटाया।

अन्दर से दादी बुदबुदायी — "इस समय क्रिसमस की शाम को हमारे घर में कौन हो सकता है?"

उसको यह भी अजीब लग रहा था कि उनका कुत्ता भी नहीं भौंका था जैसा कि अक्सर वह किसी मेहमान के आने पर किया करता था।

लड़की इसाबेल[69] ने दरवाजा खोला तो वहॉ तो नकली सैन्टा बड़ी बहादुरी से मुस्कुराता हुआ खड़ा था। दरवाजा खुलते ही वह बोला — "हो हो हो।"

इसाबेल तो उसको देख कर बहुत खुश हो गयी — "अरे यह तो सैन्टा क्लौज़ है।" वह आगे की तरफ दौड़ी और उसने उस रात वाले चालाक मेहमान को चारों तरफ से अपनी बॉहों में घेर लिया।

लड़का डेवी[70] तो मुॅह बन्द किये ही बैठा रहा। इसी तरह से उनके दादी और दादा जी भी कुछ नहीं बोल सके। वे तो बहुत ही

[69] Isabel – name of the girl
[70] Davy – name of the boy

आश्चर्य में पड़े हुए थे पर इसाबेल ने सैन्टा को उसके पंजों से पकड़ लिया और वह उसको घर के अन्दर ले आयी।

कायोटी अपना भारी थैला अपने कन्धे से उतार कर नीचे रखता हुआ बोला — "मेरे पास सबके लिये क्रिसमस की भेंटें है। हो हो हो।"

इसाबेल दादी की तरफ मुड़ कर बोली — "दादी मॉ, क्या सैन्टा आज शाम के खाने के लिये हमारे यहॉ रुक सकता है?"

नकली सैन्टा बोला — "भगवान तुम्हारा भला करे मेरी बेटी। तुम्हारे अन्दर वास्तव में क्रिसमस की भावना है।"

दादा और दादी दोनों ही बूढ़े हो रहे थे। उनको अब ठीक से दिखायी भी नहीं देता था। उन्होंने तो बस यही देखा कि एक छोटा सा आदमी लाल पोशाक पहने खड़ा था।

लड़की ने दादी से मिन्नत की — "दादी उसको खाने के लिये यहॉ रुकने दो न।"

दादी बोली — "तुम ठीक कहती हो। आज क्रिसमस की शाम है न? आज किसी भी भूखे अजनबी का हमारे साथ खाना खाने के लिये स्वागत है।" और दादा जी ने मेज के पास एक और कुर्सी ला कर रख दी।

कायोटी ने पहली बार डेवी की कुर्सी को पहियों पर देखा। वह अपने हाथों से उस कुर्सी के पहियों को घुमा कर मेज की तरफ ला रहा था।

उस मेज पर दूसरे लोग पहले से ही बैठे हुए थे। वे सब अपने आप बैठे थे। कायोटी ने ऐसी कुर्सी पहले कभी नहीं देखी थी सो वह बोला — "ओह, तुम कितने अच्छे खिलौने पर बैठे हो।"

डेवी बोला — "यही बात कुछ बच्चे मेरे स्कूल में भी कहते हैं। पर यह पहियों वाली कुर्सी है, खिलौना नहीं। मैं इस पर इसलिये बैठता हूँ क्योंकि मेरी टाँगें काम नहीं करतीं।"

चालाक की समझ में कुछ नहीं आया। वह बोला — "ओह।"

डेवी शर्मीली आवाज में बोला — "कोई बात नहीं सैन्टा।"

कायोटी को जो हमेशा ही भूखा रहता था इन कुर्सी और पहियों की बातों से कोई लगाव नहीं था। वह तुरन्त ही मेज पर रखे मॉस के गोलों के कटोरे के पास पहुँच गया और उसे उठा लिया।

पर जब कायोटी ने दादा जी की आवाज सुनी — "अब हम इस पवित्र रात को भगवान से उनकी मेहरबानी की प्रार्थना करते हैं।" तो तुरन्त ही उसने वह कटोरा मेज पर नीचे रख दिया।

उसने भी अपना सिर झुका लिया और अपने दोनों पंजे एक साथ मिला लिये और आदमियों के साथ प्रार्थना करने का बहाना करने लगा।

दादा जी आगे बोले — "हे भगवान, हमको तन्दुरुस्ती और खुशी देने के लिये धन्यवाद और तुम सबको भी किसमस की खुशी मिले[71]।"

[71] Mery Christmas to all

उस चालाक ने मॉस के गोलों के साथ स्पाघैट्टी[72] पहले कभी नहीं खायी थीं। यह दादा जी का बहुत ही प्रिय खाना था इसलिये दादी ने उसे दादा जी के लिये क्रिसमस की शाम के खाने के लिये बहुत मन से बनाया था।

पहले तो कायोटी को वे लम्बी स्पाघैट्टी खाने में बहुत मुश्किल पड़ी पर फिर वह उनको आसानी से खा गया। उसने उनको इतना खाया इतना खाया कि उसको अपने फूले हुए पेट पर बॅधी रस्सी ढीली करनी पड़ी।

जब दादी मॉ ने उसको काशीफल की पाई का एक टुकड़ा खाने के लिये दिया तब वह अपना पेट भरे होने की वजह से वाकई उसको लेने में हिचकिचा रहा था पर मिठाई के बाद तो वह कुछ और खा ही नहीं सका।

बहिन रैवन ने खिड़की में से यह देखने के लिये झॉका कि वहॉ यह सब क्या चल रहा था। उसको कायोटी की चालाकी की तारीफ करनी ही पड़ी पर उसको लगा कि अगर वह उसकी जगह होती तो शायद वह उसकी चालाकी से ज़्यादा अच्छी चालाकी खेल सकती।

[72] Spaghetti with meatballs – spaghetti is like Indian Sevian, much more long than them. See its picture above.

खाना खा कर डेवी ने अपनी कुर्सी मेज के पास से हटा ली और उसे क्रिसमस पेड़[73] के पास ले गया। उसने पूछा — "सैन्टा, क्या तुम हमारी भेंटें खोलने के लिये रुक सकते हो?"

अपने बेकार के से भूसे से भरे थैले के बारे में जिसको कि वह क्रिसमस की भेंट की तरह वहाँ छोड़ने वाला था सोचते हुए कायोटी बोला — "मुझे अब जाना चाहिये क्योंकि मुझे इस खास रात को और भी कई जगह जाना है।"

इसाबेल ने उससे प्रार्थना की — "सैन्टा, थोड़ी देर के लिये रुक जाओ न।"

ठीक इसी समय उस चालाक ने उस घर से चले जाने का विचार किया तो उसने अपनी कुर्सी से दरवाजे की तरफ और फिर अँधेरे में घर से बाहर जाने का प्लान बनाया।

पर उसके भरे पेट को धन्यवाद कि वह ऐसा करते समय अपनी कुर्सी से लुढ़क गया और अपने भूसे से भरे हुए थैले पर सिर के बल जा कर गिर गया।

उसके गिरने से वह थैला खुल गया और उसमें जो कुछ उसके अन्दर रखा था फर्श पर बिखर गया। कायोटी ने फिर जो देखा तो उसको तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ।

[73] Christmas tree – there is a custom in Christians that before Christmas they set up a tree, decorate it with lights and ornaments and keep their presents under it for the Christmas day.

वह सोच रहा था कि उसमें से भूसा बाहर निकल कर बिखर गया होगा पर नहीं। उसमें तो भूसे की बजाय बड़ी सुन्दरता से लिपटे हुए रिबन बॅधे चार पैकेट बाहर निकल पड़े।

पर यह जादू उसका किया हुआ नहीं था। तब क्या यह काम किसमस की आत्मा का था?

जल्दी से यह सब सोचते हुए उस चालाक ने अपने सबसे पास जो पैकेट पड़ा था वह उठा लिया। उस पैकेट पर लगे लेबल पर लिखा था "इसाबेल" सो वह पैकेट उसने इसाबेल को दे दिया।

खुशी खुशी इसाबेल ने उस पैकेट का ऊपर का कागज फाड़ा तो देखा कि उसमें तो रंगों का एक सैट था। सारे साइज़ के ब्रश थे। ड्राइंग बनाने का खास कागज था और बहुत सारी रंगीन पैन्सिलें थीं जैसी कि बड़े कलाकार इस्तेमाल करते हैं।

वह और भी ज़्यादा खुशी से चिल्लायी — "ओह सैन्टा धन्यवाद, तुमको बहुत बहुत धन्यवाद। मुझे यह सब बहुत पसन्द है।"

कायोटी की चाल में तो भेंट देना शामिल नहीं था इसलिये वह तो आश्चर्यचकित था। फिर परिवार ने बारी बारी से अपनी अपनी भेंटें खोलीं। दादी को चीनी की प्लेटें, कटोरे और प्याले का एक पूरा सैट मिला। दादा जी को एक चमड़े का कोट मिला।

सब लोग बहुत खुश थे। वे सब मुस्कुराते चेहरों से डेवी की तरफ देख रहे थे। जब डेवी ने अपनी भेंट खोली तो वह तो उसे

देख कर आश्चर्यचकित रह गया। उसका पैकेट तो खाली था। वह सैन्टा की तरफ घूम कर बोला — "सैन्टा।"

कायोटी ने पहिये वाली कुर्सी में बैठे डेवी की तरफ देखा और उसके लिये अपने दिल में कुछ महसूस किया। इस चालाक ने पहले कभी किसी के लिये अपने दिल में इतना दुख महसूस नहीं किया था जितना इस समय वह डैवी के लिये कर रहा था।

यह तो उसकी उससे भी ज़्यादा बेरहमी वाली चाल थी जो उसने कभी किसी के लिये सोची होती।

वह दरवाजे की तरफ बड़ी तेज़ी से भागा और उस बर्फीली रात में घुड़साल में लगी रेलिंग के ऊपर जा कर बैठ गया और फिर सबकी तरफ मुँह कर के बैठ गया।

बहिन रैवन यह सब एक खम्भे के ऊपर बैठी देख रही थी। भाई कुत्ता घर के सामने वाली जगह में बैठा यह सब देख रहा था। यहाँ तक कि घोड़े भी खुले दरवाजे से यह सब देख रहे थे।

परिवार छत पर खड़ा आश्चर्य से देख रहा था कि वह आश्चर्य खुशी में बदल गया, यहाँ तक कि डेवी भी। उसका पैकेट खाली नहीं था। उसकी भेंट तो उसकी चलती हुई टाँगों में था। डेवी और उसका कुत्ता दोनों बर्फ में नाच रहे थे।

हर एक ने सैन्टा को बाई बाई किया और खुशी से बोले — "मैरी क्रिसमस सैन्टा, मैरी क्रिसमस।"

कायोटी ने अपना टोप उतारा और उसको अपने सिर के ऊपर बार बार हिलाया। यह काम उसने घर की जो बाड़ लगी थी उस पर एक टॉग पर खड़े हो कर किया। फिर वह मुस्कुराता हुआ चिल्ला कर बोला — "हो हो हो। मैरी क्रिसमस।"

बस तभी उसका पैर फिसल गया और वह एक धम्म की आवाज के साथ नीचे गिर पड़ा। उसको थोड़ी चोट लगी पर फिर भी अपने दर्द में मुस्कुरा रहा था। किसी तरह से वह एक बार फिर बोला — "हो हो हो।"

घोड़े बहुत ज़ोर से हॅस रहे थे। बेचारे कायोटी को अपना इनाम मिल चुका था। बहिन रैवन भी हॅस रही थी। वह आश्चर्य में थी और सोच रही थी कि इस रात यह किसके साथ चालाकी हुई – इस परिवार के साथ या फिर इस कायोटी के साथ।

उसने अपने पंख फैलाये और अपनी जगह से उड़ चली।

वह कायोटी से बोली — "ए सैन्टा, तुम बड़े अजीब ढंग से चल रहे हो। तुमको कोई चोट तो नहीं लगी?"

लॅगड़ाते हुए कायोटी ने जवाब दिया — "नहीं तो।"

उसको लगा कि बहिन रैवन उड़ते हुए मॉस का एक गोला थी पर वह तो एक रात में ही कई मॉस के गोले खा चुका था और चाल भी काफी खेल चुका था। आज के लिये इतना काफी था। फिर आज क्रिसमस की शाम भी तो थी न।

19 योसेमिटी का संगीत[74]

वसन्त की एक सुबह को योसेमिटी नेशनल पार्क[75] में एक कायोटी और उसका साथी एक पहाड़ी के पास एक गिलहरी का पीछा कर रहे थे कि अचानक ग्रेनाइट[76] की एक चट्टान उनके ऊपर की तरफ से गिरने लगी।

कुछ पलों में ही एक दूसरे से टकराते हुए छोटे बड़े पत्थर लुढ़कने लगे जैसे किसी ने कंचे[77] बिखरा दिये हों। वे लुढ़कते हुए पास की एक नदी में जा कर गिर गये और उखड़े हुए पेड़ों और पौधों में जा कर अटक गये।

उन लुढ़कते पत्थरों से बचने के लिये कायोटी बॉई तरफ को कूद गयी और उसका साथी दॉयी तरफ को। फिर वह भागी तो उसके बालों से धूल उड़ने लगी। इस धूल में वह अपने साथी को नहीं देख सकी और उसका साथी बिछड़ गया।

---

[74] Yosemite's Songster – a story of Native American Indians, North America.
Adapted from the book "Yosemite's Songster: one Coyote's story", by Ginger Wadsworth. USA, Yosemite Conservancy. 2013. 30 pages unnumbered. A 1-story Children's Book with pictures
[This just seems a Coyote story – not a folktale. In fact it should be entitled "Coyote's Day", not the "Yosemote's Songster". However this story is still given here.]

[75] Yosemite National Park is a national park in California State of the USA. Some beautiful pictures of one of its famous lake, Mono Lake, can be seen here - http://www.talkpundit.com/news/animals-and-nature/23-amazing-views-of-mono-lake-in-california-r44

[76] Granite is a kind of stone

[77] Translated for the word "Marbles". See their picture above.

भागते भागते कायोटी करी गॉव[78] में लगे तम्बुओं के पास से गुजरी और फिर वह एक पक्की सड़क पार कर के एक कच्ची सड़क पर आ गयी।

यह कच्ची सड़क उसको एक कत्थई रंग के मकान तक ले आयी जो दो ओक के पेड़ों[79] की छाया में बना था। वह उस मकान के नीचे की तरफ खिसक गयी जहॉ उसका घर था।

वहॉ पहुँच कर वह अपने मिट्टी के बिस्तर को खुरचने लगी और फिर उसमें चारों तरफ को कई बार घूम कर उसमें लेट गयी। उसने अपनी पूँछ अपनी नाक के ऊपर कर ली और सो गयी।

कायोटी तब जागती है जबकि अँधेरा होता है और फिर वह चिल्लाती है। सो जब अँधेरा हुआ तो उसकी ऑख खुली और उसको भूख लगी तो वह सड़क की तरफ चली – दूकानें, रैस्टौरैन्ट, इन्डियन गॉव और आने वालों के लिये जो कमरे थे वे सभी बन्द हो चुके थे।

एक बड़ा सा उल्लू एक जैफरी पाइन के पेड़ पर से चिल्लाया। एक साइकिल सवार के जाने के बाद जिसको कि रात को घर जाने के लिये देर हो गयी थी कायोटी ने अपने चारों तरफ सूँघा पर कूड़े के डिब्बे भी सब बन्द थे।

[78] Curry Village

[79] Oak trees – oak tree is a kind of shady tree.

सूरज उगने से पहले कायोटी ने अपना सिर ऊपर की तरफ उठाया और चिल्लायी पर उसके साथी ने उसकी आवाज का कोई जवाब नहीं दिया।

अब तक दोपहर हो आयी थी सो वह एक एल्डरबैरी की झाड़ी[80] के नीचे जा कर सो गयी। वह झाड़ी उसके लिये दोपहर की धूप में छतरी का काम कर रही थी।

सब जगह लोग बातें करते हुए, साइकिल पर चढ़े हुए और बसों की खिड़कियों से बाहर झॉकते हुए घूम रहे थे। कुछ लोग अपनी पीठ पर थैला लादे दूर पगडंडी पर चलने के लिये जल्दी जल्दी भागे जा रहे थे।

कुछ मछियारे मरसैड नदी[81] में सारे दिन काम करते रहे। कुछ परिवार रबर कै जैकेट पहने रबर की नावों में पास में तैरते रहे। वहॉ इन्तजार करते समय कायोटी के नुकीले कान कुछ सुनने की कोशिश करते रहे।

"अगर योसेमिटी नेशनल पार्क में तुम पहली बार आये हो तो हाथ उठाओ।" और करीब करीब एक दर्जन हाथ ऊपर उठ गये। पार्क का रखवाला लकड़ी की सड़क पर कुछ लागों को पार्क घुमा रहा था।

[80] Elderberry bush – a bush type vegetation

[81] Merced River – a 145 mile long river in California State of the USA

यह लकड़ी की सड़क इस भीगे पहाड़ी घास के मैदान को बचाने के लिये बनायी गयी थी। पार्क का वह रखवाला वहॉ रुका और उसने एक आधे डोम की तरफ इशारा किया। वह अल कैपिटन[82] डोम था।

कुछ चिड़ियॉ पेड़ों से हो कर उड़ गयीं।

सबने ऊपर देखा, झरनों के ऊपर देखा, ग्रेनाइट की चट्टानों के ऊपर देखा, बहुत से लोगों ने तस्वीरें भी खींचीं। पर किसी ने ऊॅची ऊॅची घास में छिपे जंगली कुत्ते को नहीं देखा।

कायोटी धीरे से अपनी जगह से निकल कर आगे बढ़ी।

घास में रास्ता बना और दो छोटे से कान दिखायी दिये। कायोटी उन कानों के ऊपर कूदी। अरे वह तो एक मैदान वाला चूहा था। वह तो उसका बहुत स्वादिष्ट नाश्ता था।

तीसरे पहर में चूहा खाने के बाद वह योसेमिटी घाटी के चर्च के साये में जा कर लेट गयी। वह वहॉ बहुत देर तक आराम करती रही और पास में एक हिरन घास खाता रहा।

उधर कायोटी जहॉ लेटी हुई थी वहॉ से नीचे की तरफ कारें रुक रहीं थीं और उनके दरवाजे धड़ाम धड़ाम बन्द हो रहे थे। आने वाले लोग वसन्त के मौसम के योसेमिटी झरने का फोटो लेने के लिये जल्दी जल्दी इधर उधर आ जा रहे थे।

[82] El Capitan – a building in the shape of a dome

चर्च में पियानो बजना शुरू हो गया था। एक नया शादी शुदा जोड़ा और उनके मेहमान चर्च के बाहर लाइन लगाये खड़े थे। बाहर केवल योसेमिटी झरने की आवाज ही घाटी में चारों तरफ फैल रही थी।

एक लड़का जो एक खुली गाड़ी में बैठा था अपने माँ से बोला — "मम्मी, उधर देखो। मुझे वहाँ एक कायोटी दिखायी दे रहा है।"

"कहाँ?"

"क्या उसने किसी भालू को देखा है?"

"नहीं।"

"रुको रुको, किसी को भालू दिखायी दिया क्या?"

वह गाड़ी रुक गयी। उसमें बैठे लोग अपनी अपनी भाषा बोलते हुए एक तरफ को दौड़े।

"ओह, मुझे तो भालू कहीं दिखायी नहीं दे रहा।"

"नहीं नहीं, वह हिरन नहीं है वह तो कायोटी है।"

वह खुली गाड़ी फिर से चल पड़ी और लड़के ने इशारा किया — "वहाँ, वह देखो वहाँ।"

"कहाँ?"

उसी समय गाड़ी कायोटी के पास से गुजरी और उस लड़के ने कायोटी को देखा।

दिन भर घूम कर परिवार अपने अपने कैम्पों में, कैफेटेरिया में और होटलों में शाम का खाना खाने के लिये लौटने लगे पर कायोटी को अभी तक खाना नहीं मिला था वह अभी भी भूखी थी।

वह अपनी पीली ऑखों से इधर उधर देखती हुई नदी के किनारे की तरफ चल दी जहॉ रसोइयों के घर थे।

शायद वहॉ उसको कोई बतख मिल जाये जो नदी में भटक कर उधर आ गयी हो या फिर कोई मेंढक मिल जाये जो एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूद रहा हो।

वहॉ जा कर वह इन्तजार करती रही, इधर उधर देखती रही और सुनती रही, अपनी नाक से रात की महक सूँघने की कोशिश करती रही।

शाम ढलने लगी जैसे कोई साया चट्टानों के ऊपर अपना साया डालता हुआ नीचे उतर रहा हो और योसेमिटी घाटी में अँधेरा छा गया।

कायोटी अब शिकार के लिये अकेली ही निकल पड़ी। पहले उसने उस जगह का चक्कर लगाया जहॉ कैम्प लगे थे। उसने देखा कि वहॉ बच्चे आनन्द में डूबे खाना बनाने में अपने माता पिता की सहायता करते करते बात कर रहे थे।

वे कारों में से सामान निकाल रहे थे और तम्बू लगा रहे थे। उनकी टार्चें पटबीजनों[83] की तरह चमक रही थीं। कहीं हैमबर्गर सिक रहे थे।

कुछ दिन पहले एक काला भालू इधर आ गया था सो उसकी बू वहॉ अभी तक चारों तरफ फैली हुई थी। कायोटी ने हवा को फिर से सूँघा और रुक गयी। दो बड़ी गिलहरियॉ[84] उधर से जाना चाह रही थीं तो उसने उन दोनों को जाने के लिये रास्ता दिया।

बड़ी गिलहरियों के चले जाने के बाद कायोटी ने एक बार फिर अपना मुँह उठा कर ऊपर देखा और फिर बार बार चिल्लायी पर उसकी आवाज हवा में से बिना किसी जवाब के ही लौट आयी।

उस रात कायोटी मरसैड नदी के किनारे किनारे सैन्टीनल पुल[85] तक चली गयी जो पत्थर वाले पुल के पूर्व में है। वहॉ घूमने के लिये आने वाले लोग आधे डोम की तरफ देख रहे थे और चॉद की तरफ भी जो एक पत्थर के पीछे से निकल रहा था। कुछ लोग उनकी फोटो ले रहे थे और कुछ एक दूसरे का हाथ पकड़े खड़े थे।

इस बार कायोटी पश्चिम की तरफ अपना मुँह उठा कर तारों भरे आसमान की तरफ देख कर एक बार फिर चिल्लायी। हॉ अब की बार उसने अपनी एक जानी पहचानी आवाज सुनी।

---

[83] Translated for the word “Fireflies”.

[84] Translated for the word “Skunk”. Skunk is a large squirrel like animal. See its picture above.

[85] Sentinel Bridge

कायोटी उछली। वह मकानों जितने बड़े बड़े पत्थरों को पार कर के, बड़े बड़े पेड़ों को पार कर के, चमकते हुए होटल को पार कर के वहॉ पहुँच गयी जहॉ से वह आवाज आयी थी। आहा, वहॉ तो उसका साथी खड़ा था।

उन दोनों ने आपस में अपनी अपनी नाक छुआयी और कुछ बोल कर एक दूसरे का स्वागत किया। उन्होंने अपनी अपनी घनी पूँछें ऊपर नीचे और आगे पीछे हिलायीं।

आखिर वे दोनों मिल ही गये। दोनों कायोटी कुत्ते के बच्चों की तरह पाइन के कॉटे बिछी जमीन पर खेलने लगे।

योसेमिटी का जंगल सूरज डूबने के बाद भी कभी चुपचाप नहीं रहता था। हवाएँ पेड़ों से हो कर पाइन के फूलों और सोयी हुई चिड़ियों को हिलाती बहती रहतीं।

वे बड़े बड़े पत्थरों को जो रात को सो रहे होते उनको भी हिलातीं। पत्थरों की बनी मीनारें हवा के टकराने से रोतीं। चूहे चिल्लाते और बड़े बड़े पेड़ भी चरचरा जाते। नालों में पानी छपाके मारता और झरने रात दिन गिरते ही रहते।

चॉदनी रातों में कायोटी आगे आगे चलती अपने साथी के साथ। और कायोटी के आठ पंजे योसेमिटी की घाटी में घर जाने के लिये चलते रहते।

List of Stories of “Cunning Coyote in America”

1. The Beginning of the World
2. Sun and Moon in the Box
3. Coyote Tiyodora
4. How the Buffalo Came to the Earth
5. White Crow Hides the Animals
6. Coyote and the Origin of the Death
7. Coyote and the Rolling Rock
8. Skunk Outwits Coyote
9. Why Coyote Stopped Imitating His Friends
10. Coyote the Hungry
11. Iktomi and Coyote-1
12. Iktomi and Coyote-2
13. Iktomi and the Ducks
14. The Coyote and the Turtle
15. Coyote and Wishpoosh
16. Rabbit and Coyote
17. Coyote and Eagle in the Land of the Dead
18. Coyote Christmas
19. Yosemite's Songster

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022